गैरसैंण, सोमवार
25 अगस्त 2025
वर्षः 17
अंकः 112 पृष्ठः 4
मूल्यः 2.00

जयन्त

निर्भीक – निष्पक्ष – जनसरोकार

www.dainikjayantnews.com
स्थापित 1979
संस्थापक: स्व. नरेन्द्र उनियाल

डाक पंजीयन पी.ए.ओ.07-2024-26 फोन: 9412081969 email: nagendra.uniyal@gmail.com

एक नजर

महिला से सामूहिक दुष्कर्म

रुड़की। थाना क्षेत्र में एक महिला के साथ सामूहिक दुष्कर्म का मामला सामने आया है। भगवानपुर थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी महिला भगवानपुर की एक फैक्टरी में काम करती है। वहीं उसका प्रेम प्रसंग भगवानपुर थाना क्षेत्र निवासी एक युवक के साथ चल रहा था। बताया गया है कि शनिवार रात को युवक और महिला हद्दीवाला स्थित एक स्कूल में गए थे। यहां पर दोनों बात करने लगे। आरोप है कि युवक ने अपने कुछ साथियों को भी वहां बुला लिया गया। युवक और उसके दोस्तों ने शराब पी। इन्होंने महिला के साथ सामूहिक दुष्कर्म किया। महिला का वीडियो भी आरोपियों ने बनाया। महिला को किसी को न बताने की धमकी दी और वहा से फरार हो गए। बदहवास स्थिति में स्कूल से बाहर निकली महिला ने पुलिस कंट्रोल रूम को सूचना दी। मौके पर पहुचीं और छानबीन की। पुलिस ने महिला को मेडिकल परीक्षण के लिए भेज दिया गया। इस मामले में भी पुलिस अभी जांच पड़ताल की बात कह रही है।

प्रेम नगर इलाके में छात्रों में विवाद में हुई फायरिंग

देहरादून। प्रेमनगर क्षेत्र में एक विवि के कुछ छात्रों में विवाद हुआ। विवाद इतना बढ़ गया कि दो युवक अचानक आए और तड़के हॉस्टल के बाहर फायरिंग कर दी। देहरादून के प्रेम नगर इलाके में रविवार तड़के फायरिंग की घटना सामने आई है। घटना प्रेमनगर थानाक्षेत्र में नंदा की चौकी के पास हुई। यहां कुछ छात्रों के बीच हुए झगड़े के बाद बाइक सवार दो युवकों ने गंगोत्री बॉयज हॉस्टल के बाहर हवाई फायरिंग कर दी। गनीमत रही कि घटना में कोई घायल नहीं हुआ। प्रेम नगर के थानाध्यक्ष कुंदन राम ने बताया कि उत्तरांचल यूनिवर्सिटी के कुछ छात्रों के बीच विवाद हुआ था। इस विवाद के बाद रविवार की तड़के करीब तीन बजे दो युवकों ने गंगोत्री बॉयज हॉस्टल के बाहर दो राउंड हवाई फायर किए। शुरुआती जांच से पता चला है कि जिन छात्रों से उनका झगड़ा हुआ था, वे इसी हॉस्टल में रहते हैं। पुलिस ने बताया कि हमला करने वाले युवकों की पहचान कर ली गई है। शिकायतकर्ता पक्ष के बयान दर्ज कर लिए गए हैं और मामले में मुकदमा दर्ज करने की कार्यवाही की जा रही है। वारदात से इलाके में डर का माहौल है।

लापता बुजुर्ग महिला का गंगा में नहीं लगा सुराग

ऋषिकेश। मुनिकीरेती क्षेत्र से लापता महाराष्ट्र की महिला के गंगा में बहने की आशंका पर रविवार को एसडीआरएफ की टीम ने स्वामी नारायण आश्रम के पास गंगा में तलाशी अभियान चलाया लेकिन देर शाम तक महिला का सुराग नहीं मिल सका। एसडीआरएफ निरीक्षक कविंद्र सजवाण के मुताबिक 60 वर्षीय हिना सुकेतू मजीठिया निवासी लॅबर्नम रोड, मुंबई, महाराष्ट्र कुछ दिन से लापता है। जांच में जुटी मुनिकीरेती पुलिस ने हिना के क्षेत्र के ही एक होटल में रुकने की जानकारी दी। सीसीटीवी कैमरों की जांच में हिना गंगा नहाने के लिए भी निकली थी, जो वापस होटल नहीं पहुंची। शक के आधार पर स्वामी नारायण घाट के आसपास महिला के गंगा में बहने की आशंका में यह तलाशी अभियान चलाया गया है।स्वामी नारायण घाट से हरिद्वार स्थित भीमगोड़ा बैराज तक तलाश में शाम तक कोई सुराग नहीं लगा। सोमवार को फिर से महिला की गंगा में तलाश की जाएगी। वहीं, मुनिकीरेती थानाध्यक्ष प्रदीप चौहान ने बताया हिना की बहन ने उसकी गुमशुदगी 18 अगस्त को दर्ज कराई थी।

जिले में तीन राज्य मार्ग और दो ग्रामीण मार्ग बाधित

नैनीताल। सरोवर नगरी में रविवार सुबह से ही मौसम सामान्य बना रहा और बादलों के बीच धूप भी खिली रही। शाम के समय फिर से कोहरा छा गया। बीते 24 घंटों में शहर में पांच मिमी बारिश दर्ज की गई।

बारिश के चलते जिले के तीन राज्य मार्ग और 2 ग्रामीण मार्ग बाधित रहे। जिसमें गर्जिया–घुघुतियाधार–बेतालघाट मार्ग, ओड़ाखान–पस्यापानी, रामनगर–भंडारपानी, बजून–अक्सू और रानीबाग–भीमताल–भवाली मार्ग बाधित रहा। जीआईसी मौसम विज्ञान केंद्र के अनुसार शहर का अधिकतम तापमान 25 डिग्री और न्यूनतम तापमान 21 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

प्रोटोकॉल तोड़ जनता के बीच पहुंचे सीएम धामी

● आपदा प्रभावित लोगों को देख सीएम धामी ने रुकवाया काफिला ● थराली में आपदा प्रभावित क्षेत्रों का मुख्यमंत्री ने किया स्थलीय निरीक्षण ● कुलसारी राहत शिविरों में प्रभावितों का जाना हाल, हर संभव मदद का दिया भरोसा ● प्रभावित परिवारों को सीएम ने प्रदान किए 5–5 लाख के तत्कालिक सहायता धनराशि के चेक

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने आज थराली में आपदा प्रभावित क्षेत्रों का स्थलीय निरीक्षण किया एवं आपदा प्रभावित लोगों से भी मिले। इस दौरान थराली में आपदा प्रभावित कुछ ग्रामीणों ने मुख्यमंत्री से आग्रह किया कि वे ऊपर के गांवों का भी जल्द से जल्द रास्ता खुलवा दें। मुख्यमंत्री ने प्रभावित परिवारों को हर संभव सहायता का भरोसा दिलाते हुए राहत कार्यों की समीक्षा भी की। मुख्यमंत्री ने कहा कि संकट की इस घड़ी में सरकार पूरी तरह से प्रभावित परिवारों के साथ खड़ी है। उन्होंने प्रभावित लोगों को हर संभव मदद पहुंचाने का आश्वासन दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि युद्धस्तर पर राहत और बचाव कार्य संचालित किए जा रहे हैं। विभागीय अधिकारियों को 24*7 मोड पर राहत एवं बचाव कार्य संचालित करने के निर्देश दिए गए हैं। राज्य सरकार के स्तर पर राहत व बचाव कार्यों में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी जाएगी। मुख्यमंत्री ने थराली क्षेत्र में हुई प्राकृतिक आपदा के बाद चलाए जा रहे राहत एवं बचाव कार्यों की अद्यतन स्थिति की जानकारी ली और जिला प्रशासन द्वारा संचालित राहत कार्यों की सराहना भी की। मुख्यमंत्री ने कुलसारी में बनाए गए राहत शिविर का निरीक्षण करते हुए प्रभावितों से व्यवस्थाओं और यहां पर मिल रही सुविधाओं का फीडबैक लिया। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रभावित लोगों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो इसका पूरा ध्यान रखा जाए। पूरी संवेदनशीलता के साथ प्रभावित लोगों को सभी आवश्यक सहयोग प्रदान किया जाए। सीएम ने आपदा में पूर्णतः क्षतिग्रस्त मकानों एवं मृतकों के परिजनों को 5–5 लाख की तत्काल सहायता राशि चेक प्रदान करने के साथ ही, बेघर हुए लोगों के पुनर्वास की उचित व्यवस्था करने के निर्देश भी दिए। इस दौरान प्रभावितों ने मुख्यमंत्री से अपना दुःख साझा किया। जिस पर सीएम ने पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया।

जिलाधिकारी संदीप तिवारी ने मुख्यमंत्री को अवगत कराया कि प्रभावित परिवारों को सुरक्षित राहत शिवरों में ठहराया गया है और उनको नियमित रूप से भोजन और रुकने की उचित व्यवस्था की गई है। राहत शिविर राजकीय पॉलिटेक्निक कुलसारी में 12, प्राथमिक विद्यालय चेपड़ो में 36 और थराली अपर बाजार के प्राथमिक विद्यालय में 20 लोगों को ठहराया गया है। प्रभावित लोगों को उचित चिकित्सा सुविधा भी मुहैया की जा रही है। डीएम ने बताया कि आपदा से क्षतिग्रस्त सड़क मार्गों को सुचारू कर दिया गया है। जल्द ही क्षेत्र में विद्युत आपूर्ति भी सुचारू कर दी जाएगी। क्षतिग्रस्त पेयजल लाइन की मरम्मत और पाइप लाइन बिछाने का कार्य प्रगति पर है।

शक्तिफार्म में बर्ड फ्लू की पुष्टि के बाद 1800 मुर्गियों को मारा

रुद्रपुर। शक्तिफार्म क्षेत्र के ग्राम बैकुण्ठपुर के फार्म में मुर्गियों में बर्ड फ्लू की पुष्टि के बाद रविवार को पशु चिकित्सा विभाग ने विभिन्न संगठनों व जनप्रतिनिधियों के सामने मुर्गियों को मारने के बाद उन्हें दफना दिया। बताया जाता है कि 2200 से अधिक मुर्गियां और चूजे बर्ड फ्लू की चपेट में आए थे। इसमें करीब 400 मुर्गियां व चूजे बीमारी से मर गए थे। बैकुष्ठपुर के एक फार्म में मुर्गियों और चूजों की अस्वाभाविक मौत होने के बाद पशु चिकित्सा विभाग ने सैंपल लेकर भोपाल भेजे थे। एनआईएचएसएडी द्वारा प्रेषित रिपोर्ट में इन मुर्गियों को हाईली पैथोजेनिक एविएन इन्फ्लूएंजा रोग से ग्रसित होने की पुष्टि हुई थी।

मुख्य पशु चिकित्साधिकारी की रिपोर्ट के आधार पर जिलाधिकारी नितिन सिंह भदौरिया ने मुर्गी फार्म की एक किमी परिधि को इंफेक्टेड जोन घोषित किया है। वहीं 10 किमी परिधि सतर्कता क्षेत्र घोषित किया है। रविवार को राजस्व विभाग, पशु चिकित्सा विभाग, नगर पंचायत शक्तिगढ़ की टीम ने बैकुण्ठपुर के फार्म में सभी मुर्गियों और चूजों को मारने के बाद जेसीबी से गड्ढे खोदकर उन्हें दबा दिया।

पुतिन ही नहीं.. जेलेंस्की भी करेंगे भारत का दौरा

ट्रंप के टैरिफ वॉर के बीच भारत की गजब की डिप्लोमेसी

नई दिल्ली ,भारत की रणनीतिक कूटनीति एक बार फिर वैश्विक मंच पर चर्चा का विषय बन गई है। एक ओर भारत रूस के साथ पारंपरिक मित्रता को मजबूत कर रहा है, तो दूसरी ओर यूक्रेन के साथ भी संतुलित और सहयोगी संबंधों की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। इसी के चलते रूस और यूक्रेन–दोनों देशों के राष्ट्राध्यक्षों के इस साल भारत दौरे की संभावनाओं ने अमेरिका की बेचैनी को और बढ़ा दिया है।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रूस से तेल खरीदने को लेकर भारत पर नाराजगी जाहिर करते हुए अतिरिक्त 25त्न टैरिफ लगाने का ऐलान कर दिया है। यह कदम भारत और रूस के बीच गहराते संबंधों के जवाब के रूप में देखा जा रहा है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, अमेरिका ने अब कुल मिलाकर भारत पर 50 टैरिफ लगा दिया है। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन इसी साल के अंत में भारत दौरे पर आ सकते हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने हाल ही में इसकी पुष्टि की है। यह यात्रा ऐसे समय में हो रही है जब भारत और रूस के बीच ऊर्जा, रक्षा और व्यापार के क्षेत्र में सहयोग लगातार गहराता जा रहा है।

वहीं, यूक्रेन के राष्ट्रपति वलोदिमीर जेलेंस्की भी भारत दौरे पर आ सकते हैं। भारत में यूक्रेन के राजदूत ऑलेक्जेंडर पोलिशचुक ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जेलेंस्की को भारत आने का न्योता दिया है, और फिलहाल दोनों पक्ष तारीख तय करने पर काम कर रहे हैं। राजदूत ने इस यात्रा को द्विपक्षीय संबंधों में 'नई ऊंचाई करार दिया है।

यूक्रेन के स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर दिल्ली स्थित ऐतिहासिक कुतुब मीनार को यूक्रेन के राष्ट्रीय ध्वज की रोशनी में रंगा गया।

झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री चंपई सोरेन गिरफ्तार, बेटे को भी पुलिस ने हिरासत में लिया

रांची ,झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और दिग्गज नेता चंपई सोरेन को रविवार को रांची में उनके आवास पर गिरफ्तार किया गया। उनके बेटे बाबूलाल सोरेन को भी पुलिस ने हिरासत में ले लिया है। यह कार्रवाई चंपई सोरेन द्वारा रिम्स–2 के लिए प्रस्तावित भूमि अधिग्रहण के खिलाफ एक बड़े विरोध प्रदर्शन के ऐलान के बाद की गई, जिसमें वह हजारों समर्थकों के साथ हल चलाने वाले थे।

पुलिस प्रशासन ने कानून–व्यवस्था की स्थिति बिगड़ने की आशंका के चलते यह कदम उठाया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, पूर्व मुख्यमंत्री नगड़ी में रिम्स–2 के लिए अधिग्रहित की जा रही जमीन पर किसानों के समर्थन में हल चलाकर अपना विरोध दर्ज कराने वाले थे। इस कार्यक्रम में भारी भीड़ जुटने की संभावना को देखते हुए पुलिस ने सुबह ही उनके आवास पर पहुंचकर उन्हें घर से बाहर न निकलने के निर्देश दिए। अपनी नजरबंदी पर प्रतिक्रिया देते हुए पूर्व मुख्यमंत्री चंपई सोरेन ने इसे अलोकतांत्रिक करार दिया है। उन्होंने कहा, जब डीएसपी साहब ने आकर मुझे आज कहीं भी आने–जाने से मना किया, तो मैं समझ गया कि सरकार ने मुझे रोकने का फैसला कर लिया है। हम प्रशासन के फैसले का उल्लंघन नहीं करेंगे, लेकिन यह सरकार का तानाशाही रवैया है। मैं आदिवासियों और उनके हक की लड़ाई का समर्थन कर रहा हूं, इसीलिए मुझे नजरबंद किया गया है।

पुलिस के अनुसार, यह कार्रवाई पूरी तरह से कानून–व्यवस्था बनाए रखने के लिए की गई है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि खुफिया सूचनाओं के आधार पर विरोध प्रदर्शन के दौरान शांति भंग होने की आशंका थी। उन्होंने बताया कि चंपई सोरेन के बेटे बाबूलाल सोरेन और रांची की ओर जा रहे उनके कई समर्थकों को भी ऐहतियातन एक थाने में हिरासत में रखा गया है। शहर में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं और कई जगहों पर बैरिकेडिंग की गई है। गौरतलब है कि चंपई सोरेन का आरोप है कि रिम्स–2 के निर्माण के लिए नगड़ी में जिस जमीन का अधिग्रहण किया जा रहा है, उसमें नियमों की अनदेखी की गई है।

निक्की को जिंदा जलाने के आरोपी विपिन भाटी का एनकाउंटर, पुलिस कस्टडी से की भागने की कोशिश

ग्रेटर नोएडा , उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा में कथित तौर पर पत्नी निक्की को जिंदा जलाने के आरोपी पति विपिन भाटी का पुलिस ने एनकाउंटर किया है। विपिन भाटी की गिरफ्तारी पहले ही हो चुकी थी। रविवार को पुलिस कस्टडी से भागने की कोशिश के दौरान उसका एनकाउंटर हुआ। आरोप है कि विपिन भाटी पुलिस का हथियार छीनकर कस्टडी से भागने की कोशिश कर रहा था। इसी घटनाक्रम में ग्रेटर नोएडा के सिरसा चौराहे के पास मुठभेड़ हुई, जिसमें विपिन भाटी के पैर में गोली लगी। फिलहाल उसे इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया है। निक्की की शादी 2016 में ग्रेटर नोएडा के कासना थाना क्षेत्र में रहने वाले विपिन भाटी से हुई थी। पिछले दिनों, निक्की को उसके पति और ससुराल वालों ने कथित तौर पर पीटा और फिर जलाकर मार डाला। निक्की के परिजनों का आरोप है कि उसके ससुराल वालों ने उसे ज्वलनशील पदार्थ डालकर जिंदा जलाया। निक्की को उसके बेटे के सामने आग लगाई गई। एडिशनल डीसीपी सुधीर कुमार के अनुसार, पुलिस को फोर्टिस अस्पताल से एक मेमो मिला था, जिसमें बताया गया कि एक लड़की गंभीर रूप से जली हुई हालत में आई है, जहां से उसे सफदरजंग अस्पताल में रेफर किया जा रहा है। इस सूचना पर पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची। हालांकि, निक्की की पहले ही मौत हो चुकी थी। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

डलहौजी में बादल फटने से मची तबाही, कई पुल और गाड़ियां बही

चंबा ,। हिमाचल प्रदेश के चंबा में बादल फटने की घटना सामने आई है। जानकारी के अनुसार डलहौजी–तलाई मार्ग पर तलाई नामक स्थान पर बादल फटने से नाला उफान पर आ गया। जिस कारण गुनियाला गांव में बाढ़ की चपेट में आकर तीन से चार चौपहिया वाहनों सहित कुछ दोपहिया वाहन बह गए।

तलाई में बनीखेत के नाले भी उफान पर हैं। यहां नालों के समीप स्थित घरों के अंदर तक पानी व कीचड़ पहुंच गया है। तलाई में आई बाढ़ में एक जंजघर भी बादल फटने से बाढ़ की चपेट में आ गया। भूस्खलन होने से डलहौजी के सुभाष चौक से गांधी चौक की ओर जाने वाला मार्ग अवरुद्ध हो गया है। वहीं, देवीदेहरा रॉक गार्डन में नाले में आई बाढ़ की चपेट में आकर एक पुल ढह गया व श्मशानघाट भी बाढ़ की चपेट में आ गया है। पुल ढहने से आसपास के लोगों की आवाजाही बंद हो गई है। बाढ़ का रौद्र रूप देख लोग दहशत में हैं। चंबा–पठानकोट एनएच बाथरी के समीप नाल्डा पुल के साथ पहाड़ी दरकने से बंद हो गया है। चंबा पठानकोट एनएच पर वाहनों के पहिये थम गए हैं, इस कारण हजारों मणिमहेश यात्री व अन्य लोग फंसे हुए हैं। चंबा के घोल्टी में नाले में बाढ़ आने से मोहल्ला में रहने वाले लोगों की मुश्किलें बढ़ गई हैं। वहीं, चंबा के हरदासपुरा मिंडा में एक रसोईघर में पानी आने से नुकसान हुआ है। भारी वर्षा के चलते चंबा–भरमौर एनएच सहित कई मुख्य व संपर्क मार्गों पर भारी भूस्खलन हुआ है, जिस कारण मार्गों पर वाहनों की आवाजाही बाधित हो गई है। चंबा भरमौर एनएच लाहड़ के समीप भारी भूस्खलन होने के कारण बंद है। मार्ग के बंद होने की सूचना मिलते ही एनएच प्राधिकरण की ओर से मशीनरी व कर्मचारियों को इसे बहाल करने के लिए भेज दिया है। उपायुक्त चंबा मुकेश रेप्सवाल ने कहा कि रविवार सुबह से ही जिला चंबा में भारी वर्षा का दौर जारी है।

इलाज के दौरान युवती की मौत के बाद परिजनों का हॉस्पिटल में हंगामा- तोड़फोड़

– इलाज में लापरवाही बरतते हुए गलत इंजेक्शन लगाने का आरोप

हरिद्वार। कनखल के जगजीतपुर स्थित एसआर मेडिसिटी हॉस्पिटल में शनिवार को एक युवती की मौत के बाद स्वजनों ने हंगामा किया। इलाज में लापरवाही बरतते हुए गलत इंजेक्शन लगाने का आरोप लगाते हुए तोड़फोड़ भी की गई। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और हंगामा शांत कराया। देर रात तक पुलिस, प्रशासन व स्वास्थ्य विभाग की पड़ताल के बाद अस्पताल सील कर दिया गया। पुलिस के मुताबिक, ज्वालापुर अहबाबनगर निवासी गुलबहार की बेटी सानिया को पेट दर्द व बुखार आने पर शुक्रवार रात जगजीतपुर स्थित एसआर मेडिसिटी हास्पिटल में भर्ती कराया गया था। शनिवार की शाम सानिया की तबीयत बिगड़ गई। स्वजनों ने आरोप लगाया कि गलत इंजेक्शन लगाने के बाद अचानक युवती की तबीयत बिगड़ी है। इलाज में लापरवाही का आरोप लगाते हुए स्वजनों ने हंगामा शुरू कर दिया। सूचना पर ज्वालापुर से बड़ी संख्या में स्वजनों के परिचित भी अस्पताल पहुंच गए और लापरवाही का आरोप लगाते हुए तोड़फोड़ व हंगामा किया। हंगामा बढ़ने पर डाक्टर वहां से निकल लिए। हंगामे की सूचना पर कनखल थाने के एसएसआई रमेश सैनी मौके पर पहुंचे और घटना की जानकारी जुटाते हुए हंगामा शांत कराया। स्वजनों ने पुलिस के सामने आरोप लगाया कि तबीयत बिगड़ने पर स्टाफ ने डाक्टर को सूचित किया। तब डाक्टर ने तुरंत एंबुलेंस बुलाकर युवती को फौरन अस्पताल से बाहर करने के निर्देश दिए। दावा किया कि तब तक युवती की मौत हो चुकी थी। देर रात तक पुलिस–प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग की टीम अस्पताल में स्टाफ से युवती के उपचार के बारे में जानकारी लेते हुए जांच की। एसडीएम जितेंद्र कुमार की मौजूदगी में मरीजों को दूसरे अस्पताल में शिफ्ट कराते हुए एसआर मेडिसिटी को सील कर दिया गया। सीओ सिटी शिशुपाल नेगी ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। शव का पोस्टमार्टम कराते हुए अग्रिम कार्रवाई की जाएगी। स्वास्थ्य विभाग ने कब्जे में लिए दस्तावेजः जांच के दौरान स्वास्थ्य विभाग की टीम ने युवती के उपचार से जुड़े दस्तावेज कब्जे में ले लिए। सीएमओ डा. आरके सिंह स्वयं मौके पर पहुंचे और मामले की जानकारी जुटाई। सीएमओ ने मौके पर ही एसीएम डा. रमेश कुंवर को प्रकरण की जांच सौंप दी। उन्होंने बताया कि मरीज के इलाज से संबंधित सभी दस्तावेज कब्जे में ले लिए गए हैं। युवती के स्वजनों से जानकारी लेने के साथ ही डाकटर व स्टाफ के बयान भी दर्ज किए जाएंगे। डाक्टरों ने आरोपों को बताया गलतः एसआर मेडिसिटी के संचालक डा. एसके मिश्रा ने इस संबंध में मीडिया को बयान जारी करते कहा कि युवती को तेज बुखार, बहु–अंग विफलता के लक्षण, प्लेटलेट्स की कमी, सांस लेने में कठिनाई और चेहरे पर सूजन की शिकायत के साथ भर्ती कराया गया था।

टैरिफ का असर: अमेरिका के लिए भारतीय डाकसेवा सस्पेंड

नई दिल्ली , आजकल भारत और अमेरिका में संबंध सही नहीं चल रहे हैं, इसीलिए दोनों देशों की तरफ से कुछ सख्त फैसले लिए जाने का सिलसिला जारी है। नए घटनाक्रम के तहत भारतीय डाक विभाग 25 अगस्त से अमेरिका के लिए ज्यादातर डाक सामानों की बुकिंग सस्पेंड करने जा रहा है। फिलहाल ये फैसला अस्थायी रूप से लागू होगा। 23 अगस्त को डाक विभाग ने एक प्रेस नोट जारी करके इसकी जानकारी दी। यह कदम अमेरिकी सरकार की ओर से 30 जुलाई 2025 को जारी एक आदेश के बाद आया है, जिसके तहत 800 अमेरिकी डॉलर तक के आयातित सामानों पर टैरिफ छूट वापस ले ली गई है। हालांकि, 100 डॉलर (करीब 8,700 रुपए) तक की कीमत वाले गिफ्ट आइटम्स को ड्यूटी से छूट मिलती रहेगी। इससे पहले 800 डॉलर यानी करीब 70 हजार रुपए तक के सामान ड्यूटी फ्री थे।

प्रधानमंत्री राबुका की पहली भारत यात्रा, दिल्ली में हुआ स्वागत

नई दिल्ली ,प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को दुनिया का 'बॉस बताने वाले फिजी के प्रधानमंत्री सिटिवेनी लिगामामादा राबुका तीन दिवसीय दौरे पर भारत आए हैं। यह उनकी भारत की पहली आधिकारिक यात्रा है। वह रविवार को दिल्ली पहुंचे, जहां केंद्रीय मंत्री सुकांत मजूमदार ने उनका स्वागत किया। फिजी के प्रधानमंत्री के साथ उनकी पत्नी सुलुएती राबुका भी हैं। प्रतिनिधिमंडल में स्वास्थ्य मंत्री रातू अटोनियो लालबालावु और वरिष्ठ अधिकारी शामिल हैं। भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्सझ् पर प्रधानमंत्री राबुका के आगमन की जानकारी साझा करते हुए लिखा, फिजी के प्रधानमंत्री सिटिवेनी राबुका का अपनी पहली यात्रा पर नई दिल्ली पहुंचने पर हार्दिक स्वागत है। प्रधानमंत्री राबुका का एयरपोर्ट पर केंद्रीय मंत्री सुकांता मजूमदार ने स्वागत किया। यह यात्रा विविध क्षेत्रों में साझेदारी को और गहरा करेगी। अपनी भारत यात्रा के दौरान फिजी के प्रधानमंत्री सोमवार को पीएम नरेंद्र मोदी के साथ वार्ता करेंगे। प्रधानमंत्री मोदी की तरफ से फिजी के पीएम के लिए लंच का आयोजन होगा। इसके बाद प्रधानमंत्री सिटिवेनी राबुका भारतीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात करेंगे। बता दें कि राष्ट्रपति मुर्मू ने अगस्त 2024 में फिजी का दौरा किया था। भारतीय विदेश मंत्रालय का मानना है कि प्रधानमंत्री राबुका की यह यात्रा भारत और फिजी के बीच लंबे समय से चले आ रहे मजबूत और स्थायी संबंधों को रेखांकित करती है।

दिल्ली के रामलीला मैदान में एसएससी अभ्यर्थियों–शिक्षकों का प्रदर्शन

नईदिल्ली, दिल्ली के रामलीला मैदान में छात्र महाआंदोलन के बैनर तले हजारों छात्र और शिक्षक कर्मचारी चयन आयोग (एसएससी) के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। अभ्यर्थी और शिक्षक 24 और 25 अगस्त को यहां क्रांति मार्च के लिए इक्के हुए हैं। इन लोगों की मांगों में एसएससी की परीक्षा प्रणाली में अनियमितताओं को दूर करना, तकनीकी और प्रशासनिक कमियों को दूर करना और परीक्षा कराने वाली एजेंसी को हटाने समेत कई मुद्दे शामिल हैं। प्रदर्शनकारियों की पहली मांग परीक्षा कराने वाली एजेंसी एजुक्विटी को हटाने की है। छात्रों का कहना है कि एजेंसी पहले विवादों में रही है और ब्लैकलिस्टेड भी रह चुकी है। प्रदर्शनकारी परीक्षा में व्यवधान और तकनीकी गड़बड़ियों को दूर करने की मांग कर रहे हैं। अभ्यर्थियों का कहना है कि कई बार अचानक परीक्षा रद्द कर दी गई, कंप्यूटर सर्वर क्रैश, बायोमेट्रिक सिस्टम का फेल होना और गलत परीक्षा केंद्र आवंटन जैसी गंभीर खामियां सामने आई हैं। अभ्यर्थियों का कहना है कि कई परीक्षाओं के रद्द होने से उन्हें आर्थिक नुकसान हुआ है।

अब वॉट्सएप–ईमेल पर मिलेगा कोर्ट का समन और वारंट, सरकार ने लागू किया नया नियम

नई दिल्ली ,दिल्ली सरकार ने समन और गिरफ्तारी वारंट की तामील को लेकर बड़ा बदलाव किया है। अब अदालत का समन और वारंट लोगों को मोबाइल पर व्हाट्सएप और ईमेल के जरिए भेजा जा सकेगा।

इसके लिए सरकार ने दिल्ली बीएनएसएस (समन और वारंट की तामील) नियम, 2025 अधिसूचित कर दिए हैं। जानकारी के मुताबिक, सरकार के इस फैसले से मिनटों में समन की डिलीवरी संभव हो जाएगी और समय व कागजी प्रक्रिया की बचत होगी। इस अधिसूचना को उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना पहले ही मंजूरी दे चुके हैं। नई व्यवस्था के तहत अदालतों द्वारा जारी समन और वारंट पर जज की डिजिटल मुहर और हस्ताक्षर होंगे।

भारत को बड़ी उपलब्धि : एयर डिफेंस प्रणाली का किया हथियार परीक्षण

फाइटर जेट, ड्रोन, हेलीकॉप्टर को मार गिराने में सक्षम

नई दिल्ली ,। भारत ने एक बड़ी उपलब्धि हासिल करते हुए इंटीग्रेटेड एयर डिफेंस हथियार प्रणाली (आईएडब्ल्यूएस) का सफल परीक्षण किया है। यह परीक्षण भारत के एयर डिफेंस सिस्टम व क्षमता को एक नए युग में ले जाने वाला साबित हुआ है। विशेषज्ञों के मुताबिक यह उपलब्धि भारत को उन चुनिंदा देशों की श्रेणी में शामिल करती है जिनके पास आधुनिक, स्वदेशी और बहु–स्तरीय वायु रक्षा प्रणाली मौजूद है। आईएडब्ल्यूएस एक बहु–स्तरीय वायु रक्षा प्रणाली है जिसमें पूरी तरह स्वदेशी क्विक रिएक्शन सरफेस टू एयर मिसाइल (क्यूआरएसएएम), एडवांस्ड वेरी शॉर्ट रेंज एयर डिफेंस सिस्टम मिसाइलें तथा एक उच्च शक्ति वाला लेजर आधारित निर्देशित ऊर्जा हथियार शामिल है। इस महत्वपूर्ण परीक्षण पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा, मैं डीआरडीओ, भारतीय सशस्त्र बलों और उद्योग जगत को आईएडब्ल्यूएस के सफल विकास के लिए बधाई देता हूँ। यह अनूठा उड़ान परीक्षण हमारे देश की बहु–स्तरीय एयर डिफेंस क्षमता को स्थापित करता है। यह महत्वपूर्ण स्थानों की सुरक्षा को मजबूती देगा व देश को शत्रु के हवाई खतरों के प्रति और अधिक सशक्त बनाएगा। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने रविवार सुबह जानकारी देते हुए बताया कि रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने 23 अगस्त को दोपहर लगभग 12 बजकर 30 मिनट पर ओडिशा तट से इस एकीकृत वायु रक्षा हथियार प्रणाली का सफल पहला उड़ान परीक्षण किया है। इस उपलब्धि पर बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि डीआरडीओ, भारतीय सशस्त्र बलों और उद्योग जगत ने मिलकर देश की सुरक्षा क्षमता को नई मजबूती प्रदान की है। गौरतलब है कि स्वदेशी तकनीक पर आधारित यह परीक्षण डीआरडीओ ने किया है। दरअसल आईएडब्ल्यूएस एक बहु–स्तरीय एयर डिफेंस सिस्टम है, जिसे पूरी तरह स्वदेशी तकनीक से विकसित किया गया है। इसमें क्विक रिएक्शन सरफेस टू एयर मिसाइल शामिल हैं। यह मिसाइल दुश्मन के लड़ाकू विमानों और मिसाइलों को मध्यम दूरी पर निशाना बनाने में सक्षम है। इसके अलावा इसमें लगा एडवांस्ड वेरी शॉर्ट रेंज एयर डिफेंस सिस्टम कम ऊँचाई पर आने वाले हवाई खतरों जैसे ड्रोन, हेलीकॉप्टर और फाइटर जेट्स को तुरंत निष्क्रिय करने की क्षमता रखता है।

सम्पादकीय

आपदाओं का अनवरत चक्र

धराली के बाद थराली, प्रकृति का कोप है कि थामने का नाम नहीं ले रहा है। नदिया नाले विकराल रूप लेकर विनाश बरसा रहे है, और इंसान है कि बस बेबस सा असहाय। उत्तराखंड न जाने कितनी ही बार इसी प्रकृति के कोप का शिकार बनता आया है। केदारनाथ आपदा आज भी भुलाए नहीं भूलता। इस बड़ी आपदा के बाद भी उत्तराखंड फिर खड़ा हुआ लेकिन आपदाएं हैं कि करुणा बरसाने को तैयार ही नहीं है। प्रत्येक मानसून उत्तराखंड के लिए ऐसी कड़वी यादें छोड़ जाता है जिसकी तबाही की गूंज ना जाने कितने ही दशकों तक सुनाई देती है। उत्तराखंड का जनपद उत्तरकाशी प्राकृतिक आपदाओं से जूझता हुआ एक जिला है जो फिर सुर्खियों में है, जहां के एक छोटे से कस्बे धराली में आज भी जल प्रलय में जिंदगियां तलाशी जा रही हैं। यहां एक साथ कई स्थानों पर फटे बादलों ने पूरे कस्बे को ही तबाह कर दिया है न जाने कितने लोग अभी काल का शिकार बने हैं इसकी गिनती नहीं हो पाई है। पहाड़ों से आए मलबे ने एक हंसते खेलते कस्बे को वीराने में बदल दिया। सब कुछ इतना जल्दी हुआ कि लोगों को भागने तक का मौका नहीं मिल पाया धराली के बाद अब थराली में आपदा के मंजर ने उत्तराखंड आपदा तंत्र की बुनियाद हिला दी है। उत्तराखंड की यह नियति है कि यहां ऐसे हादसे होते आए हैं। तमाम व्यवस्थाओं के बावजूद प्रकृति के प्रकोप के आगे व्यवस्थाएं लाचार नजर आती है। उत्तरकाशी का धराली और अब चमोली जनपद के थरारी में आई प्राकृतिक आपदा के बाद अभी भी लोगों को तलाशने का काम किया जा रहा है, न जाने कितने ही घर, दुकान, संस्थान तबाह हो गए, थराली में तो मलबे में दब गए लोगों की तो अभी कोई गिनती ही नहीं है। उत्तराखंड से सामने आती ऐसी घटनाएं स्पष्ट इशारा करती है कि आज भी प्रकृति के आगे हम बेबस हैं। प्रदेश का आपदा तंत्र धराली से ही पारीक नहीं हो पाया कि अब थराली ने रहा तंत्र की मानव कमर ही तोड़कर रख दी। बाजू जिसके पूरा आपदा तंत्र रात दिन एक किए हुए अपने कर्तव्यों को निभा रहा है। इस समय तो सबसे जरूरी यह है की प्रभावित क्षेत्र में फंसे लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया जाए। पूरा उत्तराखंड इस घटना के बाद चिंतन में है। इस संकट की घड़ी में प्रभावित लोगों की सुरक्षा की कामना करनी चाहिए और उम्मीद की जानी चाहिए कि जल्द ही स्थिति सामान्य होगी, लेकिन बादल फटने की घटनाओं के दौरान मलबा अपनी आगोश में कई ऐसी जिंदगी को भी समा लेता है जिनका नामोनिशान तक शायद कभी नहीं मिल पाता। अब तो बस बरसात थमे तो पहाड़ों की यह विनाशलीला थमे।

क्या कोई राहुल को 1987 के जम्मू कश्मीर के चुनाव की याद नहीं दिलाता है?

राहुल के सक्रिय राजनीति में आने के बाद परिवार के प्रति निष्ठावान नवीन चावला को चुनाव आयुक्त बनाया गया था। इतना ही नहीं उन पर विवाद होने के बावजूद उनको मुख्य चुनाव आयुक्त बनाया गया। लेकिन अब राहुल इस बात पर सवाल उठा रहे हैं कि चुनाव आयुक्त को प्रधानमंत्री, नेता प्रतिपक्ष और एक कैबिनेट मंत्री की सदस्यता वाली कमेटी क्यों चुनती है? क्या वे चाहते हैं कि चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति विपक्ष को करने दिया जाए? इसी तरह राहुल गांधी जब चुनाव आयोग पर वोट चोरी करने का आरोप लगाते हैं तो क्या कोई उनको 1987 के जम्मू कश्मीर के चुनाव की याद नहीं दिलाता है? कांग्रेस और नेशनल कॉन्फ्रेंस गठबंधन को चुनाव जिताने के लिए उस समय क्या किया गया था, यह इतिहास में दर्ज है। वैसी धांधली, वैसा जुल्म, वैसी वोट की चोरी आजाद भारत के इतिहास में तो नहीं देखी गई है। कांग्रेस चुनाव तो जीत गई, लेकिन चुनाव के बाद जम्मू कश्मीर के लोगों का दिल्ली के शासन से ऐसा मोहभंग हुआ कि लोग आजादी चाहने लगे, जिससे पाकिस्तान को मौका मिला और पूरा प्रदेश आतंकवाद व छद्म युद्ध की चपेट में आ गया। उस वोट के लूट की जिम्मेदार राजीव गांधी की केंद्र सरकार थी। ऐसी अनेक और भी मिसालें दी जा सकती हैं। सबको यहां लिखने की जरुरत नहीं है।

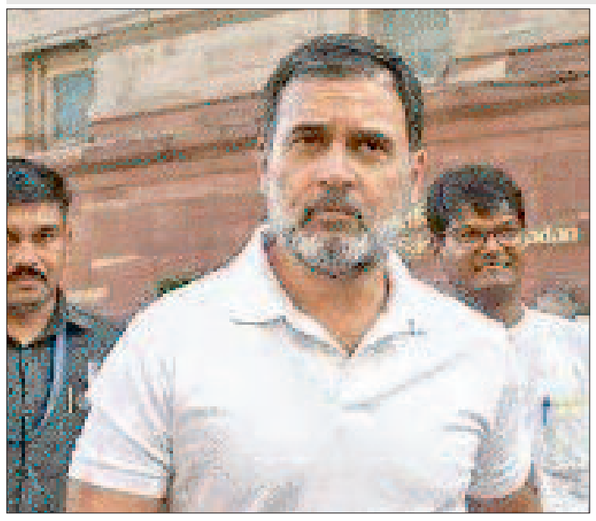

अजीत द्विवेदी

कांग्रेस के नेता राहुल गांधी इन दिनों मूर्तिभंजन में लगे हैं। वे प्रतिमाओं के सिंदूर खरोंच रहे हैं। वे इस संकल्प और रणनीति के साथ काम कर रहे हैं कि अगर हम चुनाव नहीं जीत सकते हैं तो चुनाव की पूरी प्रक्रिया को संदिग्ध बना दिया जाए। अगर हम किसी मुकदमे में फंसे हैं तो जांच की पूरी प्रक्रिया और हर जांच एजेंसी को संदिग्ध बना दिया जाए। अगर हमारी खबरों को प्रमुखता से जगह नहीं मिलती है तो मीडिया की साख को संदिग्ध बना दिया जाए।

अगर कारोबारी हमें चंदा नहीं देते हैं या कम देते हैं तो सभी कारोबारियों को क्रोनी कैपिटलिस्ट साबित कर दिया जाए। अगर अधिकारी हमें सलामी नहीं देते हैं तो पूरी नौकरशाही को भ्रष्ट और सरकार का पिछलग्गू बता दिया जाए। अगर न्यायपालिका से मनमाफिक फैसला नहीं आता है तो उसे सरकार के लिए प्रतिबद्ध बता दिया जाए। इस तरह वे हर संस्था को तहस नहस करने की दिशा में बढ़ गए हैं। ऐसी अराजक राजनीति कुछ समय पहले आम आदमी पार्टी के अरविंद केजरीवाल ने शुरू की थी। हालांकि मुख्यमंत्री रहने और दो राज्यों में सरकार बनाने के बाद उनकी राजनीति में ठहराव आ गया है।

अब राहुल गांधी ने केजरीवाल की राजनीतिक किताब का एक पन्ना खोल कर उसे पढ़ना शुरू किया है। हालांकि दोनों में फर्क यह है कि केजरीवाल ने अपनी राजनीतिक पार्टी 2012 में बनाई, जबकि राहुल गांधी की पार्टी कांग्रेस देश की सबसे पुरानी पार्टी है और सबसे लंबे समय तक सत्ता में रही है। सत्ता भी सबसे लंबे समय तक राहुल गांधी के परनाना, उनकी दादी और उनके पिता के हाथ में रही है। परोक्ष रूप से 10 साल तक शासन उनकी मां और उनके हाथ में भी रहा है। कांग्रेस ने अपने लंबे शासन में संस्थाओं को जो रूप दिया और जिस तरह से संस्थाओं का इस्तेमाल किया आज भी संस्थाएं उसी तरह से काम कर रही हैं। कह सकते हैं कि उसके मुकाबले गिरावट ज्यादा आ गई है। तब भी यह सिर्फ डिग्री का ही फर्क है।

सोचें, राहुल गांधी चुनाव की पूरी प्रणाली को मर चुका बता रहे हैं। कांग्रेस को इस बात पर आपत्ति है कि चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति में सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस को हटा कर सरकार के एक कैबिनेट मंत्री को रखा गया। लेकिन कांग्रेस के लंबे शासनकाल में तो सीधे सरकार ही चुनाव आयुक्तों को नियुक्त करती थी! राहुल गांधी के सक्रिय राजनीति में आने के बाद कांग्रेस पार्टी ने मुख्य चुनाव आयुक्त के पद से रिटायर हुए एमएस गिल को मनमोहन सिंह की सरकार में मंत्री बनाया था।

राहुल के सक्रिय राजनीति में आने के बाद परिवार के प्रति निष्ठावान नवीन चावला को चुनाव आयुक्त बनाया गया था। इतना ही नहीं उन पर विवाद होने के बावजूद उनको मुख्य चुनाव आयुक्त बनाया गया। लेकिन अब राहुल इस बात पर सवाल उठा रहे हैं कि चुनाव आयुक्त को प्रधानमंत्री, नेता प्रतिपक्ष और एक कैबिनेट मंत्री की सदस्यता वाली कमेटी क्यों चुनती है? क्या वे चाहते हैं कि चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति विपक्ष को करने दिया जाए?

इसी तरह राहुल गांधी जब चुनाव आयोग पर वोट चोरी करने का आरोप लगाते हैं तो क्या कोई उनको 1987 के जम्मू कश्मीर के चुनाव की याद नहीं दिलाता है? कांग्रेस और नेशनल कॉन्फ्रेंस गठबंधन को चुनाव जिताने के लिए उस समय क्या किया गया था, यह इतिहास में दर्ज है। वैसी धांधली, वैसा जुल्म, वैसी वोट की चोरी आजाद भारत के इतिहास में तो नहीं देखी गई है। कांग्रेस चुनाव तो जीत गई, लेकिन चुनाव के बाद जम्मू कश्मीर के लोगों का दिल्ली के शासन से ऐसा मोहभंग हुआ कि लोग आजादी चाहने लगे, जिससे पाकिस्तान को मौका मिला और पूरा प्रदेश आतंकवाद व छद्म युद्ध की चपेट में आ गया। उस वोट के लूट की जिम्मेदार राजीव गांधी की केंद्र सरकार थी। ऐसी अनेक और भी मिसालें दी जा सकती हैं। सबको यहां लिखने की जरुरत नहीं है।

ऐसे ही वे न्यायपालिका से लेकर जांच एजेंसियों और मीडिया से लेकर कॉरपोरेट तक को कठघरे में खड़ा करते हैं। वे कांग्रेस का इतिहास भूल जाते हैं या उनको जानकारी ही नहीं है कि मौजूदा सिस्टम कांग्रेस का ही बनाया हुआ है। अभी तो कम से न्यायपालिका में वरिष्ठता के आधार पर नियुक्ति हो रही है। इंदिरा गांधी ने तो वरिष्ठता के नियम को ही बदल दिया था। उन्होंने 1973 में जस्टिस एमएन शेलत, जस्टिस एएन ग्रोवर और जस्टिस केएस हेगड़े की वरिष्ठता को दरकिनार करके चौथे नंबर के जज जस्टिस अजित नाथ रे को चीफ जस्टिस बनाया था और चार साल बाद 1977 में जस्टिस हंसराज खन्ना की वरिष्ठता को दरकिनार करके जस्टिस हमीदुल्ला बेग को चीफ जस्टिस बनाया था।

गौरतलब है कि जस्टिस हंसराज खन्ना ने इमरजेंसी में मौलिक अधिकार निलंबित करने के इंदिरा गांधी सरकार के फैसले की आलोचना की थी और उसके खिलाफ अपना निर्णय दिया था। ध्यान रहे जजों के रिटायर होने के बाद उनको मलाईदार पदों पर बैठाने का चलन भी कांग्रेस ने ही शुरू किया। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग का अध्यक्ष कोई रिटायर चीफ जस्टिस ही होगा यह नियम कांग्रेस की सरकार ने बनाया और सबसे पहले जस्टिस रंगनाथ मिश्र उस पद पर बैठे।

कारोबारियों का मामला भी कुछ अलग नहीं है। राहुल गांधी आरोप लगाते हैं कि देश की सारी संपत्ति चार पांच लोगों के हाथ में सौंप दी गई है। यह चलन भी कांग्रेस का ही शुरू किया हुआ है। आजादी के बाद सोवियत मॉडल पर कंपनियों को लाइसेंस बांटे जाते थे। राहुल गांधी के दादा फिरोज गांधी ने इसमें गड़बड़ी के आरोप लगाए थे। हालांकि तब कोई जांच नहीं हो सकी लेकिन उनके निधन के कई साल बाद 1967 में इसकी जांच के लिए आरके हजारी के नेतृत्व में हजारी कमेटी का गठन किया गया था। कमेटी ने इंडस्ट्री डेवलपमेंट एंड रेगुलेशन एक्ट 1951 के तहत दिए गए लाइसेंसों की समीक्षा की थी। बाद में इस कमेटी की रिपोर्ट पर आगे की कार्रवाई के लिए सुबिमल दत्ता की कमेटी बनी थी। इन दोनों की रिपोर्ट में कहा गया कि लाइसेंसिग नीति में भ्रष्टाचार है और चुनिंदा कंपनियों को मदद की जा रही है। यहां तक रिपोर्ट आई कि आजादी के बाद जितने लाइसेंस बांटे गए थे उनमें से 60 फीसदी से ज्यादा लाइसेंस सिर्फ एक कंपनी, बिड़ला समूह को दिए गए थे।

जहां तक केंद्रीय एजेंसियों का सवाल है तो कांग्रेस के शासन में ईडी ने 65 फीसदी मुकदमे विपक्षी पार्टियों के नेताओं और उनके करीबियों पर किए थे और अब 95 फीसदी मामले ऐसे हो रहे हैं। तो यहां भी फर्क सिर्फ डिग्री का है, पैमाने का है। पहले भी एजेंसियां सरकार में बैठे लोगों के विरोधियों को परेशान करने के लिए काम करती थीं और आज भी करती हैं। राज्यों में जहां जिस विपक्षी पार्टी की सरकार है वहां वह दूसरी पार्टियों के खिलाफ राज्य की एजेंसियों का ऐसे ही इस्तेमाल कर रही हैं। इसी तरह जब तक कांग्रेस पार्टी ताकतवर रही मीडिया उसकी चरणवंदना करता रहा और जब कमजोर हुई तो उस पर टूट पड़ा। आज भाजपा ताकतवर है तो मीडिया उसके चरणचुंबन कर रहा है।

इसलिए ऐसा नहीं है कि पिछले 10 साल में सब कुछ पूरी तरह से बदल गया है या बिल्कुल नई कार्य संस्कृति आ गई है। कार्य संस्कृति पुरानी ही है फर्क सिर्फ इतना है कि उसकी डिग्री बढ़ा दी गई है। कांग्रेस ने सत्ता की हनक और सत्ता के इस्तेमाल का एक तरीका विकसित किया, आज भाजपा की सरकार उसी तरीके से काम कर रही है। कह सकते हैं कि कांग्रेस सत्ता का, एजेंसियों का, संस्थाओं का इतना दुरुपयोग नहीं करती थी। ठीक है, थोड़ा कम दुरुपयोग करती थी। लेकिन सदुपयोग तो बिल्कुल ही नहीं करती थी।

फिर उसे क्यों भाजपा के दुरुपयोग पर इतनी आपत्ति है? पहले भी सत्ता का दुरुपयोग होता था और आज भी हो रहा है। पहले भी जनता ऐसे ही भगवान भरोसे थी और आज भी है। असल में राहुल गांधी यह नहीं चाहते हैं कि सत्ता का दुरुपयोग रूके, बल्कि वे सत्ता बदल कर अपने हाथ में लेना चाहते हैं। उनको ध्यान रखना चाहिए कि सत्ता हासिल करने के लिए राजनीतिक लड़ाई लड़नी होगी। संस्थाओं की साख बिगाड़ने और हर प्रतिमा से सिंदूर खरोंचने से सत्ता नहीं मिलेगी। यह नहीं हो सकता है कि वे चुनाव आयोग की साख बिगाड़ देंगे तो उनको सत्ता मिल जाएगी। सत्ता के लिए उनको जनता के बीच जाकर लड़ना होगा, जिसमें वे अब तक बेहद कमजोर साबित हुए हैं।

दलील पुष्टि के लिए सार्वजनिक विरोध

बिहार में वोट अधिकार यात्रा कर राहुल गांधी जिस वक्त वोट चोरी का आरोप मढ़ रहे थे, ठीक उसी वक्त मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार दिल्ली में जवाबी कार्रवाई का ऐलान कर रहे थे।

उन्होंने प्रेस कांफ्रेस के मार्फत से राहुल के सवालों का जवाब देते हुए आरोपों को बेबुनियादी ठहराया। बिना हलफनामा दाखिल किए, इनकी जांच नहीं होने की बात करते हुए ज्ञानेश ने कहा, यदि राहुल सात दिन के भीतर माफी नहीं मांगते तो इन आरोपों को बेबुनियादी समझा जाएगा। गांधी ने आयोग पर वोट चोरी के आरोप लगाते हुए पांच सवाल किए थे।

जिनमें चुनाव आयोग द्वारा बड़े पैमाने में वोटर लिस्ट में फर्जीवाड़ा करने, भाजपा के एजेंट की तरह काम करने, मतदान के वीडियो सबूत नष्ट करनेडिजिटल फॉग्रेट में मतदाता सूची न मुहैया कराने व विपक्ष के सवालों के जवाब की बजाए उसे धमकाने के कारण पूछे थे। इसमें बिहार में चल रहे मतदाता सूची विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया पर भी सवाल शामिल थे। आयोग का दावा है कि वह मजबूती से मतदाताओं के साथ खड़ा है।

कुमार ने वोट चोरी जैसे शब्दों के प्रयोग को करोड़ों मतदाताओं व लाखों चुनाव कर्मचारियों की ईमानदारी पर हमला बताया। आयोग का दावा है कि देश के तीन लाख नागरिकों की एपिक संख्या मिलती–जुलती है। जिसके संज्ञान में आते ही बदलाव किया गया। कांग्रेस ने ज्ञानेश कुमार पर भाजपा प्रवक्ता की तरह बात करने का आरोप लगाते हुए संवैधानिक रूप से दायित्व निभाने की सलाह दी।

बेशक अपनी पहली प्रेस कांफ्रेस में मुख्य संवैधानिक संस्था के मुखिया की बजाए राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी की तरह बात करके ज्ञानेश विपक्ष के आरोपों के सटीक जवाब देने से बचते नजर आए। जल्दबाजी में उठाए गए उनके इस कदम से नाराज विपक्ष ज्ञानेश के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव लाने पर विचार कर रहा है। ध्यान देने वाली है कि मुख्य चुनाव आयुक्त या अन्य चुनाव आयुक्तों को अधिनियम 2023 के अनुसार उसी आधार पर हटाया जा सकता है, जिस आधार पर न्यायाधीश को हटाया जा सकता है।

हालांकि विपक्ष के पास इसे पारित कराने भर की संख्या नहीं है, मगर अपनी दलील की पुष्टि के लिए वे सार्वजनिक मंच से विरोध करने में सफल होते नजर आना चाहेंगे। शीर्ष अदालत में मामला होन के चलते दोनों पक्षों को किसी तरह के आरापों–प्रत्यारोपों पर लगाम लगानी चाहिए। यह गंभीर मसला है, मुनासिब होगा कि आरोपों को सिद्ध करने या खारिज करने में कोई संदेह की गुंजाइश नहीं छोड़ी जानी चाहिए।

आत्मनिर्भरता के मंसूबे पर पानी फिरता

देश में तिलहन के घटते रकबे के चलते कुछ विशेषज्ञों ने शंका जताई है कि भारत 2030–31 तक खाद्य तेलों में आत्मनिर्भर होने के लक्ष्य को शायद ही हासिल कर पाए। खाद्य तेलों की घरेलू मांग को पूरा करने के लिए सरकार ने 2030–31 तक देश में खाद्य तेलों का उत्पादन 2.54 करोड़ टन तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा है। लेकिन किसानों की प्राथमिकताएं बदलते जाने से इस मंसूबे पर पानी फिरता दिखलाई पड़ रहा है। इस खरीफ सीजन में सोयाबीन और मूंगफली जैसी तिलहन फसलों की कम रकबे में बुआई हुई है। आकलन है कि इन फसलों के रकबे में इस बार करीब छह प्रतिशत की गिरावट आई है। बीते वर्ष तिलहन फसलों की बुआई 161 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में की गई थी, जो घट कर 156 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में रह गई है। सोयाबीन की बुआई में भी छह प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। बुआई का यह रुख स्पष्ट रूप से किसानों की प्राथमिकताओं में परिवर्तन का संकेत है, जो यकीनन खाद्य तेलों में आत्मनिर्भरता की दिशा में बड़ा अवरोधक होगा। भारत खाद्य तेलों की अपनी कुल खपत का करीब 60 प्रतिशत आयात करता है, और इसी आंकड़े के चलते भारत दुनिया का सबसे बड़ा खाद्य तेल आयातक देश है। बीते वर्ष भारत ने 1,41,950 करोड़ रुपये से ज्यादा का खाद्य तेल आयात किया था। 2003–04 में खाद्य तेलों का आयात 44 लाख टन था, जो अब बढ़ कर 1.6 करोड़ टन पर पहुंच चुका है। दरअसल, किसानों की प्राथमिकताएं बदलना आने वाले समय भारत में खाद्य तेल परिदृश्य पर प्रतिकूल असर डाल सकता है। किसान अब तिलहन की उपज लेने की बजाय मक्का जैसी नकदी फसल को तरजीह दे रहे हैं। इसलिए कि मक्के की उपज में लागत के मुकाबले लाभ ज्यादा है। पेट्रोल में 20 प्रतिशत एथनॉल मिशग्रकी नीति ने पिछले चार–पांच वर्षो में मक्का के दाम को करीब–करीब दोगुना कर दिया है। पशु चारा और सस्ते प्रोटीनयुक्त खाद्य उद्योग में भी मक्का की मांग तेजी से बढ़ी है। इसलिए किसान तिलहन की फसल पर मक्का की पैदावार को प्राथमिकता दे रहे हैं। बेशक, इससे तिलहन का घरेलू उत्पादन उत्तरोत्तर घट सकता है। शंका है कि मौजूदा रुझान जारी रहा तो अगले छह–सात वर्षो में भारत का खाद्य तेल आयात दो करोड़ टन से भी ज्यादा हो सकता है, और आत्मनिर्भरता के मंसूबे पर तो पानी ही फिर जाएगा।

एक दीवाने की दीवानियत का टीजर जारी

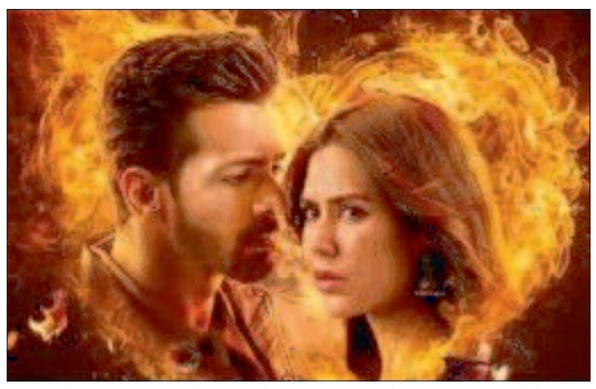

अभिनेता हर्षवर्द्धन राणे एक प्रेम कहानी लेकर आ रहे हैं। जब से फिल्म एक दीवाने की दीवानियत का ऐलान हुआ है, प्रशंसकों का उत्साह सातवें आसमान पर है। इस फिल्म में हर्षवर्द्धन के साथ अभिनेत्री सोनम बाजवा नजर आएंगी और यह पहला मौका होगा, जब ये दोनों कलाकार पर्दे पर साथ दिखाई देंगे। अब आखिरकार एक दीवाने की दीवानियक का टीजर रिलीज हो गया है, जिसमें प्यार, जुनून, नफरत और पागलपन देखने को मिल रहा है। हर्षवर्द्धन और सोनम की जोड़ी को दर्शकों से जबरदस्त सराहना मिल रही है। दोनों के बीच की केमिस्ट्री लोगों का दिल जीत रही है। फिल्म में उनके इमोशनल सीन दर्शकों को गहराई से छू रहे हैं। एक दीवाने की दीवानियत को इस साल दिवाली के मौके पर यानी 21 अक्टूबर को रिलीज किया जाएगा। बॉक्स ऑफिस पर इस फिल्म का सामना आयुष्मान खुराना की फिल्म थामा से होगा। इस फिल्म के निर्देशन की कमान मिलाप मिलन जवेरी ने संभाली है। टीजर की शुरुआत हर्षवर्धन राणे का वॉयसओवर है, जिसमें वो कहते हैं, तेरे लिए मेरा प्यार, तेरा भी मौतजा नहीं, ये मरते दम तक रहेगा, सिर्फ आज नहीं। इसके साथ बैकग्राउंड म्यूजिक भी है। टीजर में सोनम बाजवा और हर्षवर्धन राणे के बीच दिल टूटने, लड़ाई और भावनात्मक प्रेम कहानी दिखाई गई है। बता दें कि इस फिल्म का संगीत कुणाल वर्मा, कौशिक–गुड्डू, रजत नागपाल, अंकुर आर पाठक, राहुल मिश्रा और डीजे चेतस ने तैयार किया है।

नेहा मलिक के ग्लैमरस लुक्स ने फैंस को किया दीवाना, समुद्र किनारे फ्लॉन्ट किया बोल्ड अंदाज

भोजपुरी सिनेमा की जानी–मानी अभिनेत्री नेहा मलिक की हाल ही में सोशल मीडिया पर शेयर की गई तस्वीरें धमाल मचा रही हैं. नेहा को सोशल मीडिया क्वीन कहना गलत नहीं होगा. अभिनेत्री हर दिन अपने फैंस को अपनी खूबसूरत और बोल्ड फोटोज से हैरान कर देती हैं. हाल ही में नेहा मलिक अपनी फोटोज को लेकर फिर से चर्चा में हैं. अभिनेत्री ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर समुद्र किनारे ली गई फोटोज शेयर की हैं, जिनमें उन्होंने डेसिंग और ग्लैमरस अंदाज में पोज दिए हैं. फोटोज में नेहा ऑरेंज और ग्रे शेड के पेंटसूट में बेहद खूबसूरत नजर आ रही हैं. उन्होंने इस आउटफिट को डीपनेक ब्रालेट के साथ कंप्लीट किया है. नेहा ने अपने बॉस लेडी लुक को खुले स्ट्रेट बालों, ग्लॉसी मेकअप और स्टाइलिश चश्मे के साथ खास बना दिया. इन फोटोज में नेहा का कॉन्फिडेंस और बोल्डनेस उनके फैंस को दीवाना बना रहा है. नेहा मलिक इन दिनों कान्स फिल्म फेस्टिवल में अपने बोल्ड अंदाज का जलवा दिखा रही हैं और अपनी शानदार फैशन सेंस से सभी का ध्यान आकर्षित कर रही हैं. उनके इस नए अवतार ने सोशल मीडिया पर खलबली मचा दी, जहां फैंस उनकी तस्वीरों को जमकर लाइक और कमेंट कर रहे हैं.

कैमरून ग्रीन ने ऑस्ट्रेलिया की ओर से दूसरा सबसे तेज वनडे शतक लगाया, बनाए ये रिकॉर्ड्स

नईदिल्ली,ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम के ऑलराउंडर कैमरून ग्रीन ने दक्षिण अफ्रीका क्रिकेट टीम के विरुद्ध सीरीज के तीसरे वनडे मैच में जोरदार शतक (118*) लगाया। यह उनके वनडे करियर का पहला शतक साबित हुआ। उनकी इस शतकीय पारी की बदौलत ऑस्ट्रेलिया ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 400 से अधिक रन का स्कोर बनाया। बता दें कि ग्रीन से पहले ट्रेविस हेड (142) और मिचेल मार्श (100) ने शतक लगाए थे।

आइए ग्रीन के आंकड़ों पर एक नजर डालते हैं। मैके के मैदान पर ऑस्ट्रेलिया ने जब 250 रन के स्कोर पर अपना पहला विकेट खोया, तब ग्रीन क्रीज पर आए। सीरीज के शुरुआती 2 वनडे में 3 और 35 रन के स्कोर करने वाले ग्रीन तीसरे मैच में अच्छी लय में नजर आए। नंबर–3 पर उन्होंने ताबड़तोड़ बल्लेबाजी करते हुए शतक लगाया। वह 55 गेंदों में 118 रन बनाकर नाबाद रहे। उन्होंने एलेक्स कैरी (50*) के साथ मिलकर तीसरे विकेट के लिए 164 रन की साझेदारी की। ग्रीन ने 47 गेंदों में अपना शतक पूरा किया। वह ऑस्ट्रेलिया की ओर से वनडे में दूसरा सबसे तेज शतक लगाने वाले बल्लेबाज बने। ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों में उनसे आगे सिर्फ ग्लेन मैक्सवेल हैं, जिन्होंने 40 गेंदों में शतक (बनाम नीदरलैंड, 2023) जड़ा था। बता दें कि विश्व क्रिकेट में सबसे तेज वनडे शतक का रिकॉर्ड एबी डिविलियर्स के नाम पर दर्ज है, जिन्होंने 31 गेंदों में (बनाम वेस्टइंडीज, 2015) ये कारनामा किया था। ग्रीन ने 2020 में अपने वनडे करियर की शुरुआत की थी। इस बल्लेबाजी ऑलराउंडर ने अब तक 31 वनडे खेले हैं, जिसमें 43.4 की औसत के साथ 782 रन बनाए हैं। इस बीच वह 1 शतक के अलावा 2 अर्धशतक भी लगा चुके हैं। गेंदबाजी में उन्होंने 20 विकेट लिए हैं। दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध उन्होंने अब तक 5 पारियां खेली हैं, जिसमें 58.0 की औसत के साथ कुल 174 रन अपने नाम किए हैं। ऑस्ट्रेलिया ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 50 ओवर के बाद 431/2 का स्कोर बनाया।

एमेज़ॉन एमएक्स प्लेयर ने हाफ सीए सीज़न 2 का ट्रेलर किया रिलीज

एमेज़ॉन की मुफ़्त वीडियो स्ट्रीमिंग सेवा, एमेज़ॉन एमएक्स प्लेयर ने आज दर्शकों का इंतजार खत्म करते हुए, हाफ सीए की दूसरी कड़ी का ट्रेलर रिलीज़ कर दिया है, जिसमें आर्ची और नीरज की ज़िंदगी की एक करीबी झलक दिखाई गई है, जो अब तक की सबसे मुश्किल चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। ये सीरीज़ वहीं से शुरू होती है जहाँ पहला सीज़न खत्म हुआ था, और आर्ची मेहता की कहानी को आगे बढ़ाती है, जो अपनी मुश्किल पढ़ाई और तीन साल की आर्टिकलशिप के बीच तालमेल बिठाने की कोशिश कर रही है। उधर, नीरज गोयल सीए फाइनल परीक्षा में अपनी आखिरी प्रयास के लिए की जान से मेहनत कर रहा है, पर कामयाबी की राह उतनी आसान नहीं है, और इसी बीच उसके अतीत का कोई शख़्स फिर

से सामने आता है। अहसास चन्ना, प्रीत कमानी, ज्ञानेंद्र त्रिपाठी, ऐश्वर्या ओझा, अनमोल कजानी और रोहन जोशी के बेहतरीन अभिनय वाली इस सीरीज़ का हर फ्रेम बिल्कुल असल जिंदगी की तरह लगता है और जुड़ाव महसूस कराता है। द वायरल फीवर द्वारा प्रोड्यूस की गई सीरीज़, हाफ सीए सीजन 2 को तत्सत पांडे, हरीश पेदिन्ति और खुशबू बैद ने लिखा है,

ट्रेविस हेड ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ जड़ा वनडे करियर का पहला शतक, ये बनाए रिकॉर्ड्स

नईदिल्ली, ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम के सलामी बल्लेबाज ट्रेविस हेड ने दक्षिण अफ्रीका क्रिकेट टीम के खिलाफ तीसरे वनडे मुकाबले में शानदार शतकीय पारी (142) खेली। हेड ने दक्षिण अफ्रीका की शानदार गेंदबाजी आक्रमण की धज्जियां उड़ाते हुए तूफानी बल्लेबाजी की। उन्होंने केवल 80 गेंदों में ही शतक पूरा कर लिया। ये उनके वनडे करियर का 7वां और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहला शतक रहा। ऐसे में आइए हेड की पारी और उनके आंकड़ों पर एक नजर डालते हैं। हेड ने 103 गेंदों का सामना किया और 142 रन बनाए। उनके बल्ले से 17 चौके और 5 छक्के निकले। उनकी स्ट्राइक रेट 137.86 की रही। उन्हें केशव महाराज ने आउट किया। हेड ने मैदान में उतरने के साथ ही दक्षिण अफ्रीका के गेंदबाजों की धुनाई शुरू कर दी। उन्होंने 32 गेंदों में अपना अर्धशतक पूरा किया था। उनका साथ मिचेल मार्श ने भी खूब दिया और दोनों ने पहले विकेट के लिए 205 गेंदों में 250 रन जोड़ दिए।

एशिया कप 2025 में भारतीय टीम की जर्सी पर नहीं होगा ड्रीम इलेवन का लोगो

नईदिल्ली, ड्रीम इलेवन ने भारतीय क्रिकेट टीम की मुख्य प्रायोजकर्ता से अपना नाम वापस ले लिया है। यह फैसला एशिया कप 2025 की शुरुआत से ठीक कुछ दिन पहले आया है, जिसका आगाज 9 सितंबर को होना है। रिपोर्ट के अनुसार, कंपनी का कदम संसद में हाल ही में पारित हुए ऑनलाइन खेलों के प्रचार और विनियमन विधेयक, 2025 के बाद सामने आया है। इस विधेयक के लागू होने से खेल कंपनियों पर नए नियम और पाबंदियां लागू हो गई हैं। रिपोर्ट के अनुसार, नए पारित विधेयक के तहत वास्तविक धन से जुड़े ऑनलाइन खेल मंचों पर रोक लगाई गई

है। इनमें ड्रीम इलेवन भी शामिल है। इसी कारण कंपनी ने भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के साथ अपनी साझेदारी जारी न रखने के संकेत दिए हैं, हालांकि इस पर आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया ने स्पष्ट किया है कि बोर्ड पूरी तरह से राष्ट्रीय कानूनों और केंद्र सरकार की नीतियों का पालन करेगा।

एशिया कप 2025 से पहले बीसीसीआई नई जर्सी प्रायोजन के लिए नई बोली आमंत्रित कर सकता है। यदि कोई नया प्रायोजक नहीं मिलता है तो भारतीय टीम बिना किसी प्रमुख लोगो के मैदान पर उतर सकती है। रिपोर्ट के अनुसार ड्रीम इलेवन का लोगो लगी नई जर्सियां छप चुकी थी, लेकिन अब उन्हें इस टूर्नामेंट में इस्तेमाल नहीं किया जाएगा।

संक्षिप्त समाचार

शमशान कमेटी के लिए मनोज अध्यक्ष, पीयूष महामंत्री बने

काशीपुर। जोशी श्मशान घाट जीणोद्धार समिति की पूर्व कार्यकारिणी को भंग कर नई कार्यकारिणी का गठन किया गया है। मनोज जोशी को अध्यक्ष तो पीयूष को महामंत्री बनाया गया है। तय किया गया कि कमेटी का कार्यकाल दो साल रहेगा। संतोषजनक काम न होने पर कमेटी को कभी भंग करने पर सहमति बनी है। रविवार को धर्मवीर जोशी की अध्यक्षता मे हुई जोशी समाज की बैठक में जोशी श्मशान जीणोद्धार समिति की नई कार्यकारिणी का गठन हुआ। धर्मवीर जोशी, विजय जोशी, महेंद्र शर्मा, सुभाष शर्मा, नरेंद्र जोशी संरक्षक बनाए गए। जबकि मनोज जोशी अध्यक्ष, भीम जोशी उपाध्यक्ष, पीयूष जोशी महामंत्री, बृजेश जोशी मंत्री, हिमांशु, शिवम कोषाध्यक्ष बनाए गए। अनिल जोशी, अरुण जोशी, सत्यम जोशी, नितिन, अजय को सदस्य बनाया गया है। बैठक में सर्वसम्मति से तीन प्रस्तावों पर मुहर लगाई गई। नई कमेटी का कार्यकाल दो वर्ष होगा। पुरानी कमेटी, नई कमेटी को पूर्ण लेखा–जोखा देगी। महामंत्री पीयूष ने कमेटी द्वारा सदस्यता अभियान चलाने की बात कही। यहां रोहिताश जोशी, सतपाल जोशी, अरुण कुमार, राजेश कुमार, अमरीष जोशी, नरेंद्र कुमार, सुरेंद्र कुमार, राजेंद्र कुमार, कन्चू जोशी, सुनील कुमार, हरगोविंद जोशी, बहादुर जोशी, अजय कुमार, जुगनू, धर्मेंद्र जोशी रहे।

फर्जी कागजात तैयार कर युवती संग शादी का पंजीकरण कराया

काशीपुर। फर्जी कागजात तैयार कर शादी करने के मामले में पुलिस ने एक युवक के खिलाफ कोर्ट के आदेश पर केस दर्ज किया है। एक युवती ने कहा कि पिछले साल उसके इंस्टाग्राम पर रेशम सिंह पुत्र कुलवंत सिंह निवासी भोगपुर फार्म से बात शुरू हई। एक माह में दोनों की दोस्ती हो गई। तीन माह रेशम सिंह उसे बहला फुसलाकर केहरीपुर ले गया। वहां पर उसने युवती से शारीरिक संबंध बनाकर वीडियो बना ली। तीन अक्तूबर को रेशम सिंह ने उसे कॉल कर तहसील बुलाया। गांव के ज्ञानी एवं ग्राम प्रधान भोगपुर के प्रमाण पत्र दिखाकर धमकी दी। एक अधिकारी के पास ले जाकर विवाह का रजिस्ट्रेशन करा लिया। इसकी जानकारी युवती के घरवालों को हुई तो परिजनों ने ग्राम प्रधान भोगपुर, ज्ञानी से प्रमाण पत्रों के बारे में जानकारी की तो दोनों प्रमाण पत्रों को फर्जी बताया। युवती एवं उसके परिजनों ने रेशम सिंह द्वारा फर्जी कागजात तैयार कर युवती की आपत्तिजनक वीडियो बनाकर वायरल करने की धमकी देकर गलत तरीके से विवाह का रजिस्ट्रेशन करने का आरोप लगाया। प्रभारी कोतवाल जावेद मलिक ने बताया कि न्यायिक मजिस्ट्रेट के आदेश पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज किया है।

लालकुआं रेलवे स्टेशन के विस्तारीकरण कार्यों की होगी जांच

रामनगर। मंडल रेल प्रबंधक इज्जतनगर वीणा सिन्हा ने रविवार को लालकुआं रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने स्टेशन के विस्तारीकरण कार्य की खराब गुणवत्ता का वायरल वीडियो का संज्ञान लेते हुए जल्द जांच करने की बात कही। डीआरएम वीणा सिन्हा रविवार को अपने स्पेशल सैलून से लालकुआं रेलवे स्टेशन पहुंची। यहां उन्होंने रनिंग रूम का निरीक्षण किया। उसके बाद रेल भूमि में चल रहे निर्माण कार्य का जायजा लिया। पत्रकारों से वार्ता के दौरान उनसे रेलवे स्टेशन के विस्तारीकरण कार्य की खराब गुणवत्ता को लेकर वायरल वीडियों के संबंध में सवाल पूछा गया तो उन्होंने कहा कि मामला उनके संज्ञान में आ गया है। जल्द ही इसमें जांच बिठाने की कार्रवाई की जाएगी।

किसानों के समर्थन को हरिद्वार पहुंचे जसपुर के किसान

काशीपुर। बहादराबाद में पुलिस द्वारा किसानों पर लाठीचार्ज करने से नाराज भाकियू किसानों को समर्थन देने को हरिद्वार पहुंच गए हैं। बता दें कि गुरुवार को प्रदेश के किसान देहरादून में स्मार्ट मीटर का विरोध करने जा रहे थे। बहादराबाद टोल प्लाजा पर पुलिस ने उन्हें रोक दिया। नाराज किसानों ने टोल पर ही धरना प्रदर्शन शुरू किया तो पुलिस ने किसानों पर लाठी चार्ज कर दिया था।

इससे कई किसान नेता चोटिल हो गए थे। इस घटना के विरोध में जिले की कई कोतवाली थानों में किसानों ने धरना प्रदर्शन किया था। रविवार को किसानों के समर्थन में किसान हरिद्वार पहुंच गए हैं। भाकियू प्रदेश उपाध्यक्ष प्रेम सहोता, युवा ब्लॉक अध्यक्ष अमन प्रीत सिंह, युवा प्रदेश उपाध्यक्ष सुरजीत ढिल्लो, सुखवीर भुल्लर ने बताया कि किसानों के समर्थन में जसपुर से किसान हरिद्वार पहुंच गए हैं।

गुलदार को कैद करने के लिए लगाए पिंजरें व कैमरे

दो दिन पूर्व सतपुली मल्ली के समीप गुलदार ने मासूम को बनाया था निवाला

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वारः सतपुली मल्ली क्षेत्र में गुलदार द्वारा मासूम को निवाला बनाने के बाद वन विभाग ने घटनास्थल पर पिंजरे व कैमरे लगा दिए हैं। हालांकि, अब तक गुलदार पिंजरे में कैद नहीं हो पाया है। लेकिन, ग्रामीणों को सतपुली बाजार व आसपास के क्षेत्र में गुलदार घूमा हुआ दिखाई दे रहा है।

मालूम हो कि शुक्रवार रात गुलदार ने नेपाली श्रमिक के डेरे से उठाकर चार वर्षीय मासूम को अपना निवाला बना दिया था।

घटना के बाद मौके पर पहुंची वन विभाग व पुलिस की टीम ने कुछ दूर झाड़ियों से बच्चे का शव बरामद किया। आसपास के क्षेत्र से मौके पर पहुंचे ग्रामीणों ने वन विभाग से गुलदार को आदमखोर घोषित कर उसे मारने की मांग उठाई। प्रभागीय वनाधिकारी आकाश गंगवार के समक्ष भी ग्रामीणों ने घटना को लेकर रोष व्यक्त किया। लोगों का कहना था कि गुलदार की धमक से क्षेत्र में दहशत का माहौल बना हुआ है। वन विभाग ने ग्रामीणों को समझाते हुए घटनास्थल पर दो पिंजरे व अलग-अलग स्थानों पर चार ट्रैप कैमरे लगाए। साथ ही क्षेत्र में लगातार वन विभाग की टीम भी गश्त कर रही है। लेकिन, ग्रामीणों को रविवार सुबह गुलदार मुख्य बाजार के आसपास जंगल में घूमता हुआ दिखाई दिया। ग्रामीणों का कहना है कि उन्होंने रेतपुरव दंगलेश्वर महादेव मंदिर के आसपास भी गुलदार को देखा। ऐसे में गुलदार की धमक से ग्रामीणों में दहशत बनी हुई है। शाम ढलते ही ग्रामीणों का घरों से बाहर निकलना भी मुश्किल हो गया है।

सतपुली मल्ली में घटनास्थल के आसपास पिंजरा लगाती वन विभाग की टीम

मुख्यमंत्री पलायन रोकथाम योजना से ग्रामीणों को मिलेगा रोजागर

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ीः सरकार की मुख्यमंत्री पलायन रोकथाम योजना के तहत जिले के जयहरीखाल ब्लॉक के जड़ियाना क्लस्टर को योजना का लाभ मिल रहा है। योजना के तहत गांव का चयन किया गया और आज युवाओं को रोजगार मिल रहा है। योजना के तहत कृषि, उद्यान, डेयरी, पशुपालन, शिक्षा और रेशम जैसे विभागों की 13 योजनाओं को हरी झंडी मिली।सीडीओ गिरीश गुणवंत ने बताया कि योजना का सबसे बड़ा परिणाम यह हुआ कि पलायन प्रभावित गांवों में युवा और ग्रामीण अब गांव में ही रोजगार और स्वरोजगार के अवसर तलाश रहे हैं। डेयरी, पोल्ट्री, उद्यान, औषधीय पौधों और पारंपरिक संसाधनों से जुड़कर आत्मनिर्भरता की राह आसान हुई है। जयहरीखाल ब्लॉक के जड़ियाना गांव के अलावा द्वारीखाल, रिखणीखाल, पोखड़ा, यमकेश्वर, नैनीडांडा, बीरोंखाल, यमकेश्वर और खिर्सू ब्लाक में भी मुख्यमंत्री पलायन रोकथाम लिए गांवों का चयन किया गया है।

केंद्र के निर्माण के लिए रीप से 60 लाख व पर्यटन विभाग से 20 लाख जारी

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ीः सिद्धपीठ धारी देवी मंदिर मार्ग के समीप वे- साइड एमिनीटी केंद्र का निर्माण किया जाएगा, जिसमें श्रद्धालुओं के विश्राम के साथ ही कैफे और आउटलेट सेंटर की व्यवस्था मिल सकेगी। केंद्र का संचालन स्थानीय निवासियों का क्लस्टर लेवल फेडरेशन करेगा केंद्र निर्माण के लिए ग्रामोत्थान परियोजना (रीप) की ओर से 60 लाख व पर्यटन विभाग ने 20 लाख रुपये जारी किए हैं। केंद्र को पारंपरिक पहाड़ी शैली में बनाया जाएगा। शासन की ओर से जनपद के मुख्य पर्यटन स्थलों पर स्थानीय उत्पादों व हस्तशिल्प को बढ़ावा देने, स्थानीय लोगों को रोजगार व महिला सशक्तिकरण के लिए वे -साइड एमिनिटी (सड़क किनारे जनसुविधा केंद्र) स्थापित किए जाने की योजना संचालित की जा रही है। सीडीओ गिरीश गुणवंत ने बताया कि धारी देवी मंदिर मार्ग के प्रवेश द्वार के समीप केंद्र निर्माण के लिए जमीन चयनित कर ली गई है। करीब 142.37 लाख की लागत से केंद्र का निर्माण होगा। दो मंजिला भवन के भूतल पर बेबी केयर रूम और वेटिंग रूम होंगे। प्रथम तल पर कैफे और आउटलेट सेंटर होंगे। केंद्र में पर्यटकों को स्थानीय व्यंजनों के साथ ही स्थानीय उत्पाद और हस्तशिल्प के सामान उपलब्ध कराए जाएंगे। केंद्र का संचालन जय धारी मां फेडरेशन करेगा जिससे स्थानीय महिलाओं एवं युवाओं के लिए रोजगार सृजन होगा। फेडरेशन में 11 गांवों के 39 स्वयं सहायता समूहों के 236 सदस्य जुड़े हैं।

दुष्कर्म का प्रयास, आरोपी युवक गिरफ्तार

कोतवाली पुलिस की हिरासत में आरोपी

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वारः युवती से दुष्कर्म दुष्कर्म करने का प्रयास करने वाले दो युवकों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है।

पुलिस को दी गई तहरीर में युवती की कहना है कि उसने बीती शाम ब्ला-ब्ला एप के जरिए नोएडा-विजयनगर बाईपास से कैब बुक की। कैब में दो युवक थे। रात्रि पौने दो बजे कैब कोटद्वार पहुंची तो ही वह घर से बाहर भागी और रास्ते से अपने मित्र को काल कर उसे लाइव लोकेशन भेजी। वह और उसका दोस्त पुनः कपिल के घर गए। लेकिन, तब तक दोनों आरोपित फरार हो चुके थे। कोतवाली प्रभारी रमेश तनवार ने बताया कि मामले में गाजियाबाद निवासी कपिल सोम व मोहित राणा को गिरफ्तार किया गया है।

चालदा महाराज की स्वर्णजड़ित पालकी को कराया शाही स्नान

विकासनगर। चालदा महाराज की नवनिर्मित स्वर्णजड़ित पालकी को यमुना तट पर शाही स्नान कराया गया। शुभ लग्न पर पालकी को सिसाई मे यमुना तट पर विधि विधान से स्नान कराया गया। जिसके बाद पालकी को मंदिर में स्थापित किया गया। 27 अगस्त को होने वाले जागड़ा पर्व में नव निर्मित देव पालकी को धार्मिक अनुष्ठान के साथ भव्य स्वागत किया जाएगा।

जौनसार बावर में चालदा महाराज का प्रवास दो प्रकार से निर्धारित होता है। एक चालदा महाराज जिनका महासू धाम हनोल से प्रवास निर्धारित होता है वो इन दिनों दसऊ में विराजमान हैं, जबकि दूसरा चालदा महाराज का प्रवास थैना से शुरू होता है, जो इन दिनों खत सैली के दोहा में विराजमान हैं।

इसके बाद उनका प्रवास कचटा में होगा। कचटा प्रवास से पूर्व दोहा गांव में चालदा महाराज की 13 किलो चांदी और 23 तोला सोने से नई पालकी का निर्माण किया गया।

मवाकोट गेंद मेला मैदान में वर्षों से खड़ा बरगद का पेड़ हुआ धराशायी

जयन्त प्रतिनिधि।

भाबर क्षेत्र के अंतर्गत मवाकोट स्थित गेद मेला मैदान की शान माने जाने वाला बरगद का पेड़ रविवार को धराशायी हो गया। पेड़ लगातार नीचे से खोखला होता जा रहा था। गनीमत यह रही कि उक्त स्थान पर कोई मौजूद नहीं था। जिससे एक बड़ी घटना होने से बच गई।

इस बरगद के पेड़ से लोगों की काफी यादें जुड़ी हुई थी। पेड़ टूटने के बाद कई लोग उसे देखने के लिए पहुंच रहे थे। लोगों का कहना था कि वर्षों पूर्व इसी पैड़ की छावं में गांव की चौपाल होती थी। भीषण गर्मी में राहगीरों को पेड़ की छाव राहत देती थी। सुबह व शाम बच्चे पेड़ के नीचे खलने के लिए पहुंचते थे। लेकिन, रविवार तड़के अचानक यह भारी–भरकम पेड़ धराशायी हो गया। पेड़ गिरने से आसपास का क्षेत्र गूंज उठा। स्थानीय लोगों ने बताया कि कुछ दिन पूर्व इसी स्थान पर मेले का आयोजन किया गया था। जिसमें बड़ी संख्या में लोग मेला देखने के लिए पहुंच रहे थे। कुछ दिन पूर्व ही मेला संपन्न हुआ है। यदी उस समय यह पेड़ धराशायी होता तो बड़ा हादसा हो सकता था। लोगों का कहना है कि पेड़ की जड़ लगातार खोखली होती जा रही थी। इस बारे में वन विभाग को भी सूचना दी गई। लेकिन, वन विभाग लापरवाह बना रहा। नतीजा, आज भाबर क्षेत्र की धरोहर बदगद का पेड़ धराशायी हो गया।

कोटद्वार के मवाकोट गेंद मैदान में जमीदोज हुआ बरगद का वृक्ष

धूमधाम से मनाया गया हरितालिका तीज महोत्सव

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वारः गोर्खाली समाज सेवा समिति की ओर से आयोजित हरितालिका तीज महोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया। बच्चों व महिलाओं की ओर से विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इस दौरान बच्चों के लिए भी विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।रविवार को विशनपुर स्थित एक बारात घर में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ भाजपा के जिलाध्यक्ष राजगौरव नौटियाल ने किया। वक्ताओं ने कहा कि हमें अपनी संस्कृति व सभ्यता के प्रचार–प्रसार के लिए आगे बढ़कर कार्य करना चाहिए। इसके उपरांत गोर्खाली समाज की महिलाओं ने गोर्खाली लोक गीतों पर शानदार नृत्य की प्रस्तुति दी। तत्पश्चात विभिन्न प्रकार की खेल गतिविधियों का आयोजन किया गया। जिसमें बालक वर्ग की जलेबी दौड़ में मोहित नेगी प्रथम, आदित्य शाही द्वितीय आयुष थापा तृतीय रहे। बालिका वर्ग ईशानी प्रथम, सोनाक्षी द्वितीय रिद्धिमा तृतीय रहे। निंबू रेस के बालक वर्ग में मोहित प्रथम, सार्थक थापा द्वितीय प्रथम रावत तृतीय रहे। बालिका वर्ग में नाव्या प्रथम, सोनाली नेगी द्वितीय व रिद्धिमा तृतीय रही। लंगडी रेश के बालक वर्ग में ध्रुव राणा व प्रथम रावत प्रथम, अभिनव खत्री व सौरभ खत्री द्वितीय आयुष थापा अभिनव शाही तृतीय रहे।बालिका वर्ग में नाव्या व सोनाक्षी प्रथम, ईशानी व रिद्धिमा द्वितीय व कृपा व संयुक्ता तृतीय रही। इस मौके पर पार्षद अनिल रावत, सुरेश गुरूंग, नारायण क्षेत्री, अर्जुन थापा, ज्योति थापा, गुमान सिंह थापा मौजूद रहे।

हरितालिका तीज कार्यक्रम में प्रस्तुति देते कलाकार

सरस्वती शिशु मंदिर जानकीनगर रहा अव्वल

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वारः काशीरामपुर तल्ला स्थित प्रताप सिंह नेगी सरस्वती शिशु मंदिर में संकुल क्रीड़ा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जा रहा है। इस दौरान कबड्डी में जानकी नगर सरस्वती शिशु मंदिर प्रथम स्थान पर रहा। आयोजित प्रतियोगिताओं का शुभारंभ विद्यालय के व्यवस्थापक डा. घनानंद शर्मा व संकुल प्रमुख निर्मल कुमार केमनी ने किया। उन्होंने विद्यार्थियों को जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस दौरान कबड्डी प्रतियोगिता के बालक व बालिका वर्ग में जानकीनगर स्थित सरस्वती शिशु मंदिर प्रथम रहा। 100 मीटर दौड़ के बालक वर्ग में अंश व बालिका वर्ग में रोहिणी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। दो सौ मीटर दौड़ में सावन प्रथम, रोहणी द्वतीय रही। लंबीकूद के बालक वर्ग में आतिज व इशिता प्रथम रही, उंची कूद के बालक वर्ग में मोहित व बालिका वर्ग में इशिता प्रथम रही। बौद्धिक प्रतियोगिताओं में जानकीनगर स्थित सरस्वती शिशु मंदिर, कथानक व प्रश्नमंच व अंताक्षरी में जानकी नगर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस मौके पर विद्यालय के प्रधानाचार्य प्रदीप गुसांई, आंचल कुमार अग्रवाल, शिव प्रसाद उनियाल, महेंद्र गौड़, डा. वीरेंद्र रावत, आलोक माहेश्वरी, विवेक अग्रवाल, संजय रावत, गोपाल दत्त जखमोला मौजूद रहे।

प्रतियोगिता में कबड्डी खेलते हुए जानकी नगर स्थित सरस्वती शिशु मंदिर के खिलाड़ी

महिला से 40 लाख रुपये की साइबर ठगी

देहरादून। सोने का व्यापार शुरू करने का झांसा देकर दून की महिला से 40 लाख रुपये की साइबर ठगी करने वाली महिला साइबर ठग को उत्तराखंड पुलिस की स्पेशल टास्क फोर्स ने चंडीगढ़ से गिरफ्तार किया है। गिरोह से जुड़ी एक अन्य महिला को एसटीएफ पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। आरोपित महिला के पास से घटना में इस्तेमाल चार मोबाइल फोन, पांच सिम कार्ड, एक आधार कार्ड व तीन डेबिट कार्ड बरामद हुए हैं। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, एसटीएफ नवनीत सिंह भुल्लर ने बताया कि देहरादून निवासी एक महिला ने मई 2025 में शिकायत दर्ज कराई। बताया कि वाट्सएप पर अमेरिका के नंबर से काल कर एक महिला ने खुद को सरकारी एजेंसी की अधिकारी बताया। वाट्सएप पर फर्जी प्रोफाइल के माध्यम से विश्वास जीतकर सोने का व्यापार शुरू करने के लिए कच्चे माल के नाम पर उससे विभिन्न ट्रांजेक्शन में 40 लाख रुपये अपने खाते में ट्रांसफर करा लिए। पूरे अपराध में अंतरराष्ट्रीय वाट्सएप नंबर, फर्जी पहचान और तकनीकी माध्यमों का उपयोग किया गया। प्रकरण की गंभीरता को देखते हुए विवेचना निरीक्षक आशीष गुसांई के सिपुर्द की गई। पुलिस ने घटना में इस्तेमाल बैंक खातों, रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर व वाट्सएप से जानकारी जुटाते हुए चरणजीत कौर निवासी जीटीबी नगर, खरड़, जिला एसएएस नगर (मोहाली), पंजाब को गिरफ्तार कर लिया।

मोल्टाड़ी के छात्र नितिन आर्य उत्तराखंड एक्सिलेंस अवार्ड से सम्मानित

उत्तरकाशी। आईएसएसए फाउंडेशन ने मोल्टाड़ी के छात्र नितिन आर्य को उत्तराखंड एक्सिलेंस अवार्ड से सम्मानित किया। छात्र को अवार्ड मिलने पर शिक्षकों और क्षेत्र के लोगों ने खुशी जताई। ऋषिकेश में आयोजित कार्यक्रम में छात्र नितिन को यह सम्मान मिला। आईएसएसए फाउंडेशन उत्तराखंड एक्सीलेंस अवार्ड समारोह में प्रदेशभर के टॉपर छात्रों को सम्मानित किया गया। इसमें राजकीय इंटर कॉलेज मोल्टाड़ी के छात्र नितिन आर्य को विशेष उपलब्धि के लिए सम्मानित किया गया। नितिन ने 12वीं की बोर्ड परीक्षा में बेहतरीन प्रदर्शन कर ब्लॉक स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया था।

कांग्रेस ने फूंका प्रदेश सरकार का पुतला

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वारः पंचायत चुनाव में धंधली का आरोप लगाते हुए कांग्रेस कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों ने प्रदेश सरकार का पुतला दहन किया। कहा कि भाजपा के सत्ता में आने के बाद से प्रदेश में अराजकता का माहौल बना हुआ है। कानून व्यवस्था लगातार बिगड़ती जा रही है।

रविवार को कांग्रेस के अनुसूचित विभाग के जिलाध्यक्ष राजेंसिंह आर्य के नेतृत्व में कांग्रेसियों ने तहसील तिराहे के समीप पुतला दहन किया। वक्ताओं ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी लोकतंत्रक का मजाक उड़ा रही है। नैनीताल में हुए पंचायत चुनावों के दौरान अराजक तत्वों की खुलेआम गुंडागर्दी देखी गई। जहां पर विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य के साथ अभ्रदता की गई। साथ ही उन पर झूठे मुकदमें भी दर्ज कर दिए। कहा कि वर्तमान में प्रदेश में कानून व्यवस्था पूरी तरह से ध्वस्त हो चुकी है। भाजपा नेता हिमांशु चमोली के उत्पीड़ीन से परेशान पौड़ी निवासी जितेंद्र को आत्महत्या करनी पड़ी। कहा कि भाजपा को आगामी विधानसभा चुनाव में जनता इसका जवाब अवश्य देगी। इस मौके पर रंजना रावत, बलबीर सिंह रावत, लक्ष्मी चौहान, गोपाल सिंह गुसांई, शीला भारती, प्रेम सिंह पयाल, प्रदीप नेगी, महावीर सिंह, कृपाल सिंह, योगंबर सिंह मौजूद रहे।

कोटद्वार तहसील चौक पर सरकार का पुतला दहन करते कांग्रेसी

राजकीय शिक्षक संघ के आंदोलन के समर्थन में उतरी एससी–एसटी शिक्षक एसोसिएशन

देहरादून। प्रधानाचार्य विभागीय सीधी भर्ती सेवा नियमावली में संवैधानिक आरक्षण की व्यवस्था नहीं होने पर एससी एसटी शिक्षक एसोसिएशन ने कड़ा एतराज जताया है। एसोसिएशन ने राजकीय शिक्षक संघ के आंदोलन का भी समर्थन किया है। एसोसिएशन ने कहा कि पूर्व में इसी वजह से परीक्षा स्थगित हुई थी और अब भर्ती नियमावली में संशोधन के बावजूद आरक्षण की व्यवस्था नहीं की गई। जो आरक्षित वर्ग के शिक्षकों के हितों के खिलाफ है। शिक्षक एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष संजय कुमार टम्टा की अध्यक्षता में ऑनलाइन बैठक हुई। इसमें सर्वसम्मति से राजकीय शिक्षक संघ की चॉकडाउन हड़ताल को समर्थन देने का निर्णय लिया गया। एसोसिएशन के ने कहा कि एक ही पद पर 30–35 साल की सेवा के बाद भी शिक्षक बिना पदोन्नति के सेवानिवृत्त हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में पदोन्नति करने के बजाए सीधी भर्ती परीक्षा करना शिक्षकों के हितों के खिलाफ है। 633 से अधिक माध्यमिक स्कूलों को क्लस्टर विद्यालयों में विलय करने से भी बड़ी संख्या में प्रधानाचार्य के पद समाप्त हो जाएंगे। बैठक में आपदा और बारिश की वजह से पहले ही शिक्षण कार्य दिवस प्रभावित होने और अब शिक्षकों के आंदोलन से भी इससे बुरा प्रभाव पड़ने की संभावना जताई और प्रधानाचार्य सीधी भर्ती प्रक्रिया को निरस्त करने की मांग उठाई। बैठक का संचालन महामंत्री महेंद्र प्रकाश ने किया। बैठक में प्रांतीय उपाध्यक्ष डीआर बाराकोटी, रघुवीर सिंह तोमर, गढ़वाल मंडल अध्यक्ष अनूप कुमार पाठक, उपाध्यक्ष सुशील बाराकोटी, कुमाऊं मंडल मंत्री सुनील कुमार टम्टा, अल्मोड़ा जिला अध्यक्ष सुंदरलाल आर्य, चमोली के दिनेश शाह, देहरादून के केसर सिंह राय, पिथौरागढ़ के अनिल कुमार, हरिद्वार विजयपाल सिंह, नैनीताल वीरेन्द्र टम्टा, रुद्रप्रयाग महिपाल कोहली, उधमसिंहनगर हरिओम सिंह, पौड़ी जगदीश राठी, चंपावत मोहन सोनियाल, बागेश्वर सुनील धौनी, अर्चना सतीश, बीआर कोहली, सुधीर कुमार, नरेश टम्टा समेत अन्य शामिल हुए। निदेशालय में धरने के लिए जिलों की जिम्मेदारी तय राजकीय शिक्षक संघ मांगों को लेकर पीछे हटने के लिए तैयार नहीं है। हालांकि सरकार की ओर से हड़ताल को खत्म करने के लिए अभी तक कोई गंभीर प्रयास नहीं किए गए हैं। इधर, शिक्षक संघ ने ब्लॉक, जिला मुख्यालय और मंडल मुख्यालय में प्रदर्शन के बाद एक सितंबर से शिक्षा निदेशालय में धरने के लिए जिलों की जिम्मेदारी भी तय कर दी है।

कॉर्बेट में रात्रि विश्राम की बुकिंग करने लगे विदेशी

रामनगर। कॉर्बेट में रात्रि विश्राम के लिए विदेशियों की बुकिंग खोल दी गई है। पहले दिन विदेशियों ने ढिकाला की बुकिंग कराई।

कॉर्बेट ईको टूरिज्म प्रभारी ललित आर्या ने बताया कि विदेशियों के लिए 90 दिन व भारतीयों के लिए 45 दिन पहले रात्रि विश्राम की बुकिंग को खोल दिया जाता है। उन्होंने बताया कि 24 अगस्त की सुबह 10 बजे से बुकिंग खोल दी गई है। पहले दिन कई विदेशियों ने कॉर्बेट में रात्रि विश्राम को बुकिंग की है। उन्होंने बताया कि भारतीयों के लिए 45 दिन पहले नाइट स्टेट की बुकिंग खोली जाएगी। ढिकाला समेत सभी जोनों में 15 नवंबर से रात्रि विश्राम शुरू हो जाएगा।

युवक की मौत पर चार के खिलाफ हत्या का मुकदमा

विकासनगर। कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत बीते अप्रैल माह में शक्ति नहर में मिले हिमाचल प्रदेश निवासी युवक के शव के मामले में पुलिस ने कोर्ट के आदेश के बाद चार नामजद के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। हिमाचल प्रदेश के बद्रीपुर तहसील पांवटा साहिब–सिरमौर निवासी अमृत कौर पत्नी राजेंद्र सिंह ने मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट देहरादून की अदालत में वाद दायर कर बताया कि उसका पुत्र जितेंद्र सिंगली उर्फ मनु बीती 30 मार्च को अपनी कार लेकर घर से गया था, लेकिन वापस नहीं लौटा। एक अप्रैल को उसका शव शक्ति नहर में कुल्हाल इंटेक से बरामद हुआ। शव देखने से पता चल रहा था कि उसकी मौत अप्राकृतिक और संदिग्ध है, जिसकी शिकायत उसी दिन कोतवाली विकासनगर में दर्ज कराई गई, जबकि छह अप्रैल को सीओ कार्यालय में भी तहरीर दी गई। बावजूद इसके स्थानीय पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की है। कोर्ट में दायर वाद में मृतक की मां ने बताया कि बद्रीपुर–पांवटा निवासी गगनदीप सिंह, इंद्रजोत सिंह और गनोला तहसील छपरोली–यमुना नगर, हरियाणा निवासी अर्शदीप सिंह का उसके बेटे के साथ विवाद चल रहा था। इन तीनों व्यक्तियों ने कई बार उसके बेटे का जान से मारने की धमकी भी दी थी।

संक्षिप्त समाचार

यूकेएसएसएससी भर्ती परीक्षा देने 30 फीसदी ही पहुंचे

देहरादून। उत्तराखंड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग(यूकेएसएसएससी) ने रविवार को प्रयोगशाला सहायक और मशरूम पर्यवेक्षक के रिक्त पदों पर भर्ती के लिए लिखित परीक्षा का आयोजन किया। चार जिलों में 41 परीक्षा केंद्रों पर यह परीक्षा हुई। लेकिन इस परीक्षा शामिल होने के लिए सिर्फ 30 फीसदी ही अभ्यर्थी पहुंचे। आयोग के सचिव डॉ.शिव कुमार बरनवाल ने जानकारी दी कि 31 जनवरी को रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, उद्यान विज्ञान, पशुपालन विभाग में प्रयोगशाला सहायकों के साथ ही मशरूम पर्यवेक्षक वर्ग–तीन के रिक्त पदों के लिए विज्ञप्ति जारी की गई थी। रविवार को देहरादून, पौड़ी गढ़वाल, अल्मोड़ा और नैनीताल जिले के 41 परीक्षा केंद्रों पर लिखित परीक्षा हुई। इस परीक्षा के लिए 15887 अभ्यर्थियों ने आवेदन किया था। इसमें सिर्फ 4912 ने ही रविवार को परीक्षा दी। 69.18 फीसदी अभ्यर्थी परीक्षा देने नहीं पहुंचे। इतनी बड़ी संख्या में अभ्यर्थियों के परीक्षा छोड़ने का कारण स्पष्ट नहीं हो पाया है। आयोग के सचिव डॉ.बरनवाल ने कहा कि परीक्षा शांतिपूर्ण हुई है। परीक्षा केंद्रों पर बायोमेट्रिक उपस्थिति के आधार पर ही अभ्यर्थियों को प्रवेश दिया गया और केंद्रों पर जैमर कीभी व्यवस्था की गई थी।

लोनिवि कर्मियों ने रौपे ढ़ाई सौ पौधे

विकासनगर। एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत लोक निर्माण विभाग ने बाड़वाला–जुड्डो मार्ग पर परशुराम मंदिर चीलियो के प्रांगण और खेल मैदान में पौधरोपण किया। लोनिवि कर्मियों ने अमरूद, जामुन, आंवला, मोरपंखी, अशोक, गुड़हल, बहेड़ा, गूलर आदि के 250 सौ पौधे रोपे और नौ सौ पौधे ग्रामीणों को वितरित किए। लोनिवि एनएच खंड के मुख्य अभियंता मुकेश परमार ने ग्रामीणों को बताया कि हमें जिस प्रकार अच्छी सड़कों की जरूरत है उसी प्रकार स्वच्छ पर्यावरण की भी आवश्यकता है। जिसके लिए हमें अधिक से अधिक पेड़ों को लगाना है ताकि हमारा पर्यावरण साफ और स्वच्छ रहे। राष्ट्रीय राजमार्ग खंड देहरादून के अधिशासी अभियंता सुरेश तोमर ने ग्रामीणों को बताया कि फलदार पेड़ लगाकर पर्यावरण में सहयोग के साथ अपनी आमदनी भी कर सकते हैं। साथ ही चार पत्ती वाले पेड़ों को लगाकर जंगलों को काटने से भी बचाकर पर्यावरण संरक्षण में अपना सहयोग दे सकते हैं। इस दौरान ग्राम प्रधान पूरण सिंह, क्षेत्र पंचायत सदस्य जयपाल तोमर, सहायक अभियंता मुकेश सकलानी, जेई स्वतंत्र कुमार, चमन सिंह, केसर सिंह, बहादुर सिंह, महेंद्र सिंह, निर्मल, मोहित, देबू आदि मौजूद रहे।

सांस्कृति क्रीड़ा विकास समिति के सिद्धांत बने अध्यक्ष

विकासनगर। शहीद सुरेश तोमर जनजातीय सांस्कृतिक एवं क्रीड़ा विकास समिति की रविवार को हुई बैठक में नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। नवगठित कार्यकारिणी में सिद्धांत नेगी, हिमांशु तोमर उपाध्यक्ष, जयवीर तोमर सचिव नियुक्त किए गए। शुभम तोमर को कोषाध्यक्ष, अरुण तोमर, संदीप बागी क्रीड़ाध्यक्ष, रजत तोमर, अरविंद तोमर सांस्कृतिक अध्यक्ष, कार्तिक तोमर सह सचिव चुने गए। सिद्धार्थ चौहान को मीडिया प्रभारी, सुनील वर्मा, मनोज वर्मा प्रचार प्रसार मंत्री, डॉ. विक्की तोमर, संदीप तोमर को मंच संचालक दायित्व दिया गया। राजेंद्र तोमर, शूरवीर सिंह तोमर, रवि तोमर संरक्षक नामित किए गए।

गोरखाली सुधार सभा ने धूमधाम से मनाया हरितालिका तीज महोत्सव

ऋषिकेश। गोरखाली सुधार सभा ऋषिकेश ने रविवार को हरितालिका तीज महोत्सव धूमधाम से मनाया। इसमें महिलाओं ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। वक्ताओं ने तीज के महत्व की जानकारियां भी दी। रविवार को आईडीपीएल स्थित दुर्गामंदिर परिसर में गोरखाली सुधार सभा ऋषिकेश की ओर से हरितालिका तीज महोत्सव आयोजित किया गया। जिसका शुभारंभ क्षेत्रीय विधायक व पूर्व मंत्री प्रेमचंद अग्रवाल ने किया। विधायक निधि से मंदिर के फर्श बनाने तथा टीन शेड निर्माण करने के पांच लाख रुपये देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि हरितालिका तीज का विशेष महत्व है। गोर्खाली समाज की महिलाओं को इस दिन का बेसब्री से इंतजार रहता है। कहा कि इस व्रत से महिलाओं को सुहागिनी होने का गौरव प्राप्त होता है। कहा कि हरितालिका तीज भगवान शिव और पार्वती को समर्पित है। ऐसी मान्यता है कि मां पार्वती ने भगवान शिव को अपने पति के रूप में पाने के लिए 107 बार तप व व्रत लिया था, 108वीं बार तप और व्रत में उन्हें भगवान शिव पति के रूप में प्राप्त हुए थे।

कुमाऊं में बर्ड फ्लू की दस्तक के चलते देहरादून प्रशासन भी अलर्ट मोड पर

देहरादून। उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के कुमाऊंक्षेत्र में बर्ड फ्लू की दस्तक के चलते देहरादून प्रशासन भी अलर्ट मोड पर है। जिले में मुर्गियों और अंडों के बाहर से लाने पर पिछले एक सप्ताह से प्रतिबंध लागू है। साथ ही, मांस विक्रेताओं को विशेष सतर्कता बरतने के सख्त निर्देश दिए गए हैं। शहर में चिकन की बिक्री में भी गिरावट दर्ज की गई है। प्रशासन की ओर से मांस विक्रेताओं के साथ ही आमजन के लिए भी एडवायजरी जारी की गई है। प्रशासन ने पोल्ट्री फार्म, मांस की दुकानों और होटलों की नियमित सैंपलिंग और जांच शुरू कर दी है। इसके अलावा, लोगों को सतर्क रहने और सुरक्षित आदतें अपनाने के लिए विस्तृत एडवाइजरी भी जारी की गई है। देहरादून में बर्ड फ्लू की आशंका ने बाजारों पर असर डालना शुरू कर दिया है। चिकन की बिक्री में भारी गिरावट देखने को मिल रही है। कई लोग होटलों और रेस्टोरेंट्स में भी चिकन खाने से परहेज कर रहे हैं। हालांकि कीमतों में फिलहाल कोई कमी नहीं हुई है, लेकिन ग्राहकों की संख्या में गिरावट से व्यापारियों की चिंता बढ़ गई है। दून में मोटे तौर पर मांस की करीब 700 दुकानें और रोजाना प्रत्येक दुकान पर 40 से 50 किलो चिकन की बिक्री

होती है, जो कि इन दिनों 10 से 20 किलो पर सिमट गई है। स्वास्थ्य विभाग व प्रशासन का कहना है कि बर्ड फ्लू से घबराने की जरूरत नहीं, बल्कि सतर्क रहने की आवश्यकता है। किसी भी प्रकार के संदिग्ध लक्षण दिखने पर लोग तुरंत नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र पर जाकर चिकित्सक की सलाह लें।

इन लोगों को ज्यादा खतरा

* पोल्ट्री फार्म में काम करने वाले
* नियमित रूप से पक्षियों के संपर्क में रहने वाले
* संक्रमित पक्षियों के नजदीक रहने वाले

बर्ड फ्लू के लक्षण

* लगातार खांसी, जुकाम और बुखार
* गले में खराश और सिरदर्द
* पेट दर्द, उल्टी, मिचली
* मांसपेशियों में दर्द
* दस्त (डायरिया)
* सांस लेने में तकलीफ और बेचैनी
* आंखों की लाली और नाक से खून आना

बर्ड फ्लू से बचाव के उपाय

* कच्चे पोल्ट्री उत्पादों और अंडों को सीधे हाथ न लगाएं। * चिकन या अंडा छूने के बाद गुनगुने पानी और साबुन से हाथ धोएं। * कटिंग बोर्ड, बर्तन और चाकू को हर बार साबुन और गर्म पानी से साफ करें। चिकन और अंडे हमेशा अच्छी तरह पका कर ही खाएं। * बीमार या मृत पक्षियों के सीधे संपर्क से बचें। * पोल्ट्री फार्म में काम करने वाले लोग दस्ताने और मास्क का इस्तेमाल करें। * मांस की दुकानों और आस–पास के क्षेत्रों को साफ रखें और नियमित रूप से चूने का छिड़काव करें।

प्रेम मोहन अवस्थी बने जय काशी विश्वनाथ एसोसिएशन के अध्यक्ष

उत्तरकाशी। जय काशी विश्वनाथ एसोसिएशन ज्ञानसू की बैठक में मोटर मालिक एवं चालकों ने विभिन्न समस्याओं को लेकर चर्चा की। साथ ही नई कार्यकारिणी का गठन करते हुए प्रेम मोहन अवस्थी को अध्यक्ष चुना। रविवार को ज्ञानसू में आयोजित बैठक में मोटर मालिक और चालकों ने नई कार्यकारिणी का गठन किया जिसमें अध्यक्ष के अलावा शूरवीर सिंह रांगड़ संरक्षक, जगमोहन सिंह नेगी उपाध्यक्ष, लक्ष्मी प्रसाद अवस्थी सचिव, मोहन प्रकाश मिश्रा कोषाध्यक्ष, मनवीर सिंह कलूड़ा सह सचिव, सुंदर लाल और सोहन कुमार सदस्य चुने गए। इस दौरान सभी मोटर मालिक और चालकों ने जनपद में आई आपदा को लेकर चिंता जताई। आपदा के चलते इस बार मोटर मालिक और चालकों को बड़ा नुकसान हुआ। कई मोटर मालिक और चालक बैंक से ऋण लेकर नए वाहन लाए जिससे उनको काफी नुकसान हुआ।

त्यूणी–चकराता मोटर मार्ग पर क्रैश बैरियर नहीं होने से दुर्घटना का बना खतरा

विकासनगर। त्यूणी–चकराता–मसूरी राष्ट्रीय राजमार्ग पर अभी तक सड़क सुरक्षा मानकों को पूरा नहीं किया गया है, जिससे एनएच पर यात्रियों की सुरक्षा को खतरा बना हुआ है। इस मार्ग पर चिल्हाड़ गांव के नीचे से शिलावड़ा गांव के नीचे तक क्रैश बैरियर नहीं लगे हैं। इसके साथ ही त्यूणी के लालपुल से कचाणू धार तक के डेंजर जोन में सड़क की चौड़ाई मात्र साढ़े तीन से चार मीटर तक है। डेंजर जोन होने के कारण हमेशा दुर्घटना का खतरा बना रहता है। जागड़ा पर्व के लिए इस मार्ग से हजारों श्रद्धालु महासू धाम हनोल के लिए आवागम करेंगे। ऐसे में क्रैश बैरियर नहीं होने से श्रद्धालुओं को भी परेशानी होगी। जौनसार बावर क्षेत्र की लाइफ लाइन कही जाने वाली त्यूणी–चकराता सड़क एक दशक से अधिक समय से राष्ट्रीय राजमार्ग मंत्रालय के अधीन है। एक दशक से अधिक समय बाद भी राष्ट्रीय राजमार्ग पर सड़क सुरक्षा मानक पूरे नहीं किए गए हैं। चकराता से त्यूणी तक 85 किलोमीटर लंबी इस सड़क के 15 किलोमीटर डेंजर जोन में क्रैश बैरियर नहीं लगे हैं। क्षेत्रवासी रामानंद चौहान, धन सिंह नेगी, धूम सिंह, महेन्द्र सिंह चौहान, जगत सिंह चौहान, फतेह सिंह चौहान, जीत सिंह नेगी, चन्दन सिंह भीम दत्त उनियाल, राजू उनियाल, लछी राम, रामलाल बिजल्वाण, कान चंद्र बिजल्वाण आदि ने अधिशासी अभियंता को पत्र भेजकर क्रैश बैरियर लगाने की मांग की। उधर एनएच डिविजन डोईवाला के अधिशासी अभियंता नवनीत पाण्डे ने बताया कि त्यूणी–चकराता सड़क पर डेंजर जोन को सड़क सुरक्षा मानकों से जल्द कवर किया जाएगा।

जल संस्थान ठेका कर्मचारी घेरेंगे सचिवालय

देहरादून। उत्तराखंड जल संस्थान संविदा कर्मचारी संघ ने सचिवालय घेराव की चेतावनी दी है। संघ ने शासन से लेकर जल संस्थान मैनेजमेंट पर संविदा कर्मचारियों के शोषण का आरोप लगाया। पौड़ी डिवीजन से संविदा कर्मचारियों की समाप्त की गई सेवाओं को बहाल न किए जाने पर विरोध जताया। प्रेस क्लब में पत्रकारों से बात करते हुए प्रदेश संरक्षक गणेशनाथ गोस्वामी ने कहा कि 25 साल से सेवाएं देने वाले 38 संविदा कर्मचारियों की सेवाएं समाप्त कर दी गई हैं। श्रीनगर, श्रीकोट और शक्तिविहार से विभाग और विभाग ठेकेदार ने संविदा कर्मचारियों को नौकरी से हटा दिया है। महामंत्री मंगलेश लखेड़ा ने कहा कि कर्मचारी लंबे समय से आंदोलन कर रहे हैं। शासन की ओर से कर्मचारियों को मांगों के निस्तारण का आश्वासन दिया गया था। कहा कि इन्हीं आश्वासनों और प्रदेश में आई आपदा को ध्यान में रखते हुए आंदोलन को स्थगित कर दिया गया था। आंदोलन स्थगित करने के बावजूद अभी तक मांगों के निस्तारण की दिशा में कोई भी प्रयास नहीं किए जा रहे हैं। ऐसे में मजबूरन कर्मचारियों को नए सिरे से आंदोलन खड़ा किया जाएगा। एक सितंबर के बाद सीएम आवास घेराव, सचिवालय घेराव होगा। इस अवसर पर कुमाऊं मंडल अध्यक्ष गोविंद आर्या, गढ़वाल मंडल अध्यक्ष चंद्रमोहन खत्री, कोषाध्यक्ष श्याम सिंह, सुरेश पनेरू मौजूद रहे।

नशा मुक्ति अभियान चलाया

नई टिहरी। शराब नही संस्कार मुहिम के तहत ग्रामीण क्षेत्र विकास समिति रानीचौरी ने राजकीय इंटर कॉलेज मोलधार में नशा मुक्ति अभियान चलाया गया। उन्होंने छात्र–छात्राओं को नशे के दुष्प्रभावों से अवगत कराया। उन्होंने छात्रों को नशा न करने के शपथ पत्र भरवाकर हनुमान चालीसा भी वितरित की। जीआइसी मोलधार में आयोजित नशा मुक्त कार्यक्रम में नशा न करने और नशामुक्त समाज निर्माण में सहयोग देने का संकल्प लिया। कहा कि छात्र यह प्रण लें कि वह अपने जीवन में कभी भी नशे का सेवन नहीं करेंगे और न ही किसी अन्य को नशा करने के लिए प्रेरित होने देंगे। प्रधानाचार्य विजय सिंह कैंतुरा ने अभियान की सराहना करते हुए कहा कि युवाओं को नशे जैसी सामाजिक बुराई से बचाने के लिए ऐसे जागरूकता कार्यक्रम समय–समय पर होते रहने चाहिए। उन्होंने कहा कि हर माह इस तरह के आयोजन छात्रों के मन में नशे के प्रति गहरी चेतना जगाने में मददगार साबित होंगे। संस्था के समन्वयक जगदीश बडोनी ने कहा कि नशा शरीर और मस्तिष्क दोनों को धीरे–धीरे कमजोर करता है। युवाओं का सुनहरा भविष्य नशे की गिरफ्त में बर्बाद हो जाता है। काउंसलर रंजिता थपलियाल ने कहा कि नशा सिर्फ व्यक्ति की नही,बल्कि पूरे परिवार और समाज की खुशियों को छीन लेता है।

तंत्र–मंत्र से इलाज जे नाम पर धोखाधड़ी करने वाले तांत्रिक गुरु–चेला गिरफ्तार

हरिद्वार। तंत्र–मंत्र से इलाज का झांसा देकर लाखों रुपए की धोखाधड़ी करने वाले तांत्रिक गुरु–चेला गिरफ्तार किए गए हैं। ज्वालापुर पीठ बाजार निवासी एक महिला ने शनिवार को तांत्रिक विक्रम और उसके चेले संदीप निवासीगण लक्सर के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया था। दोनों ने ज्वालापुर क्षेत्र में कई परिवारों को तंत्र–मंत्र से बुरी शक्ति भगाने का झांसा देकर लाखों रुपए की धोखाधड़ी की थी। इस मामले में पुलिस ने दोनों आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस के मुताबिक, जानकी देवी निवासी पीठ बाजार ज्वालापुर ने तहरीर देकर बताया कि एक पंपलेट के जरिये तांत्रिक विक्रम से उनकी मुलाकात हुई थी। विक्रम ने खुद को जैतपुर लक्सर

का निवासी बताया। उन्होंने अपनी पारिवारिक समस्या बताई तो उसने घर आने के लिए कहा। एक दिन तांत्रिक विक्रम अपने एक चेले संदीप के साथ उनके घर आया। समस्या सुनकर बताया कि घर पर किसी बुरी शक्ति का साया है। अभी तुम्हारे भाई की मौत हुई है, अगला नंबर तुम्हारे पति का है। शैतानी शक्ति बहुत जल्द तुम्हारे पति को अपने साथ ले जाएगी। तांत्रिक की बातें सुनकर जानकी घबरा गई और उपाय पूछने के बाद समय–समय पर तांत्रिक विक्रम और उसके चेले संदीप को पैसे देती रही। आरोप लगाया कि दोनों ने मिलकर करीब एक लाख रुपये हड़प लिए। लेकिन परिवार की समस्या पहले जैसे ही रही।बताया कि उनके घर आने जाने वाले लोकेश राणा निवासी सीतापुर ज्वालापुर से 35 हजार रुपये, योगेन्द्र कुमार से 30 हजार रुपये, विमला, दया और बेबी से 20–20 हजार, धन्नो से 22 हजार, विक्रम से 40 हजार, अमरदीप से 28 हजार रुपये लेकर हड़प लिए।

नंदा देवी महोत्सव की तैयारियां पूरी, 28 अगस्त को मुख्यमंत्री करेंगे उद्घाटन

अल्मोड़ा। नंदा देवी महोत्सव की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। रविवार को नंदा देवी प्रांगण में आयोजित पत्रकार वार्ता में आयोजन समिति ने मेले की रूपरेखा साझा की। मेले की शुरुआत 27 अगस्त को मेहंदी प्रतियोगिता से होगी, जबकि 28 अगस्त को मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी महोत्सव का विधिवत उद्घाटन करेंगे। इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री और सांसद अजय टम्टा तथा क्षेत्र के विधायक भी मौजूद रहेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता नगर निगम के मेयर अजय वर्मा करेंगे। आयोजन समिति के अध्यक्ष मनोज वर्मा और सचिव मनोज सनवाल ने बताया कि इस बार महोत्सव को भव्य और ऐतिहासिक स्वरूप देने के लिए नगर निगम, पार्षदों, नगर व्यापार मंडल और स्थानीय संस्थाओं का विशेष सहयोग मिल रहा है। नगर के प्रमुख मंदिरों मुरली मनोहर और मल्ला महल में परंपरागत ढंग से धार्मिक अनुष्ठान आयोजित होंगे, जबकि नंदा देवी प्रांगण के साथ–

साथ एडम्स गर्ल्स इंटर कॉलेज के मैदान में भी सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यक्रम होंगे। इस पहल से अधिक संख्या में श्रद्धालुओं और दर्शकों को मेले का आनंद लेने का अवसर मिलेगा। मुख्य संयोजक अर्जुन सिंह बिष्ट ने कहा कि नंदा देवी महोत्सव केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि अल्मोड़ा की सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक एकता का प्रतीक है। उन्होंने बताया कि इस बार स्थानीय कलाकारों, महिला समूहों और आसपास के क्षेत्रों से आने वाले प्रतिभागियों को मंच प्रदान कर उनकी प्रतिभा को प्रोत्साहन दिया जाएगा। जारी कार्यक्रम के अनुसार, 29 अगस्त को खाम को निमंत्रण, 30 अगस्त को खाम लाने और 31 अगस्त को प्राण प्रतिष्ठा का आयोजन होगा। महोत्सव के दौरान विभिन्न सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यक्रमों में कुमाऊं की समृद्ध परंपराओं और लोक संस्कृति की झलक देखने को मिलेगी। पत्रकार वार्ता के दौरान मेले का आधिकारिक पोस्टर भी जारी किया गया। सचिव मनोज सनवाल ने बताया कि तैयारियां अंतिम चरण में हैं और नगर निगम सहित सभी विभागों का पूरा सहयोग मिल रहा है।

सफाई, पेयजल और विद्युत आपूर्ति की विशेष व्यवस्थाएं की जा रही हैं ताकि श्रद्धालुओं और दर्शकों को किसी प्रकार की असुविधा न हो। इस अवसर पर मुख्य संयोजक मेला पार्षद अर्जुन बिष्ट, मुख्य सांस्कृतिक संयोजक तारा जोशी, रवि गोयल, डॉ. निर्मल जोशी, उपाध्यक्ष दीपक जोशी, पार्षद अभिषेक जोशी, संजय जोशी, इंदर मोहन सिंह भंडारी, कुलदीप मेर समेत बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

प्राधिकरण ने तपोवन में चार निर्माण कार्य किए सील

नई टिहरी। प्रदेश में नदी–नालों सहित प्राकृतिक जल स्त्रोतों के किनारे अवैध निर्माण के खिलाफ जिला विकास प्राधिकरण ने रविवार को कार्रवाई की। प्राधिकरण ने नरेंद्रनगर ब्लॉक के तपोवन क्षेत्र में 4 निर्माणाधीन कार्यों को सील कर दिया।

डीएम/उपाध्यक्ष जिला स्तरीय विकास प्राधिकरण नितिका खंडेलवाल ने शनिवार को तपोवन क्षेत्र में सीलिंग की कार्यवाही कराई। बताया कि सील किए गए निर्माण कार्य में वरुण कुमार बांगा, आरती पंवार, दुर्गेश, जयंत कुमार मलिक के निर्माण शामिल है। बताया कि सभी निर्माण कार्य नाले के किनारे किए जा रहे थे। जिससे भविष्य में भारी जानमाल की हानि की संभावना को देखते हुए प्राधिकरण की टीम ने यह सीलिंग की कार्रवाई की है।

दून मेडिकल कॉलेज में स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर फिर दिखी लापरवाही

–मंत्रीजी की पत्नी को खुद अस्पताल पहुंचकर लगानी पड़ी गुहार

देहरादून। राजधानी के सबसे बड़े सरकारी अस्पताल दून मेडिकल कॉलेज में स्वास्थ्य सेवाओं की लापरवाही का चौंकाने वाला मामला सामने आया है। यहां एक कैबिनेट मंत्री के 79 वर्षीय परिजन को कैंसर विभाग में न तो सही राय दी गई और न ही समय पर भर्ती किया गया।

तीन दिन तक विभाग के डॉक्टर टालमटोल करते रहे। अंततः हालात ऐसे बने कि मंत्री की पत्नी को खुद अस्पताल पहुंचकर गुहार लगानी पड़ी।

मामले की गंभीरता को देखते हुए अस्पताल के एमएस डॉ. आरएस बिष्ट ने 24 और 26 जुलाई को कैंसर विभाग के एचओडी डॉ. दौलत सिंह को नोटिस जारी किया और कड़ी नाराजगी जताई। इसके बाद एचओडी ने संबंधित डॉक्टर से जवाब मांगा। लेकिन डॉक्टर ने उलटे एचओडी से ही रेफरल लेटर और शिकायत पत्र की मांग कर दी। इससे विभागीय अव्यवस्था और बढ़ गई। परिजनों को मजबूरी में कुछ जांचें और उपचार निजी अस्पताल में कराने पड़े। अंततः मरीज को 4 अगस्त को वरिष्ठ सर्जन डॉ. अभय कुमार के अधीन भर्ती किया गया और 13 अगस्त तक इलाज चला। परिजनों ने कहा कि अगर शुरुआती दिनों में सही परामर्श और भर्ती मिल जाती तो यह स्थिति ही न बनती।

इस पूरे घटनाक्रम के करीब 26 दिन बाद एचओडी ने विभागीय डॉक्टरों और कर्मचारियों को केवल चेतावनी नोटिस जारी कर मामले की इतिश्री कर दी।

बेल्ट ग्रेडिंग टेस्ट में 96 बच्चे हुए सफल

ऋषिकेश। उत्तराखंड कराटे एकेडमी की ओर से आयोजित टेस्ट में 200 खिलाड़ियों ने शिरकत की। इसमें 96 खिलाड़ियों ने सफलता प्राप्त की। रविवार को दून मार्ग स्थित उर्वसी कॉम्प्लेक्स में आयोजित उत्तराखंड कराटे एकेडमी में टेस्ट के दूसरे दिन 100 से अधिक खिलाड़ियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के तहत ऑरेंज, ग्रीन, पर्पल, पर्पल–वाइट, ब्राउन और ब्लैक बेल्ट के लिए टेस्ट आयोजित हुआ। टेस्ट में पंच, किक, सेल्फ डिफेंस, काता, फाइट जैसी कई कराटे तकनीकों को कराया गया। एकेडमी के मुख्य कोच राजेंद्र गुप्ता ने बताया कि खिलाड़ियों को यह बेल्ट कठिन प्रशिक्षण और मेहनत के बाद प्राप्त होती है। उन्होंने कहा कि भविष्य में इस प्रकार के कैम्प ऋषिकेश के हर क्षेत्र में आयोजित किए जाएंगे। ताकि अधिक से अधिक बच्चे खेल के माध्यम से अपना भविष्य संवार सकें। कहा कि दो दिवसीय इस बेल्ट ग्रेडिंग कैम्प में कुल 200 से अधिक खिलाड़ियों ने भाग लिया, जिसमें से 96 खिलाड़ी ग्रेडिंग में सफल रहे। कहा कि सफल खिलाड़ियों को शीघ्र ही एक सम्मान समारोह में सम्मानित किया जाएगा। मौके पर कोच वरदान वर्मा, सुमित कुमार, चिराग धमीजा, आकाश उनियाल, लक्ष्मण साहनी, कृष्ण जाटव, अर्जुन थापा, श्रेयांश जोशी, अनिकेत अवस्थी, ओशो, भूमिका शर्मा आदि उपस्थित रहे।

नई टिहरी के एच ब्लॉक में हुआ भारी भूस्खलन

नई टिहरी। लगातार हो रही बारिश के बाद जिला मुख्यालय स्थित एच ब्लॉक में नाले के पास भारी मात्रा में भूस्खलन हो गया है। जिससे एच. ब्लॉक की आवासीय कालोनी को भी खतरा पैदा हो गया है। स्थानीय निवासियों ने नगर पालिका और जिला प्रशासन से इसका तत्काल ट्रीटमेंट करने की मांग की है। बीते कई दिनों से हो रही बारिश के बाद एच ब्लॉक की बिल्डिंग नंबर 12 के निकट से मुख्य नाले तक करीब 150 मीटर हिस्से में बड़ा भूस्खलन हो गया है। इससे पुश्ता, दीवार और खेत बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गए। यही नहीं नाले किनारे अवैध रूप से निवासरत नेपाली परिवारों को भी इससे खतरा बढ़ गया है। स्थानीय निवासी अंकित कुमार, धनपाल सिंह, राकेश सिंह, वीर सिंह, आदित्य, मयंक आदि ने बताया कि उक्त स्थान पर बड़ी मात्रा में भूस्खलन हुआ है। जिससे मलबा नीचे सड़क तक आ गया है। साथ ही आवासीय कालोनी को भी खतरा हो रहा है। ऐसे में जल्द उक्त स्थान का ट्रीटमेंट कार्य किया जाए। उन्होंने आपदा प्रबंधन विभाग से उचित कार्यवाही की मांग की है।

कांग्रेस को कानून व्यवस्था और आपदा के मुद्दे पर कल राजभवन कूच

देहरादून। कानून व्यवस्था, आपदा में सरकारी लापरवाही, पंचायत चुनाव में गड़बड़ी और अपहरण के आरोपों को लेकर कांग्रेस 26 अगस्त को देहरादून में राजभवन कूच करेगी। कूच में शामिल होने के लिए प्रदेशभर से कांग्रेस कार्यकर्ता देहरादून पहुंचेंगे। साथ ही कूच में पार्टी के सभी बड़े नेता शामिल होंगे। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष संगठन सूर्यकांत धस्माना ने कहा कि राज्य में कानून का राज खत्म हो चुका है। भाजपा नेताओं की वजह से लोग आत्महत्या करने के लिए मजबूर है। धस्माना ने कहा कि अंकित भंडारी हत्याकांड से लेकर हरिद्वार में भाजपा नेत्री ने जिस तरह खुद की मासूम बेटी को दुष्कर्म के लिए सौंपा दिया, यह बताता है कि राज्य में कानून व्यवस्था नहीं बची है। यह पंचायत चुनाव में बेतालघाट में हुई गोलाबारी और नैनीताल में निर्वाचित जनप्रतिनिधियों के अपहरण से भी साफ हो चुका है। उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री के भांजे के साथ 18 करोड़ की ठगी और पूर्व मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र रावत के डीजीपी को लिखे पत्र पर भी भाजपा और सरकार को घेरते हुए कहा कि यह समय सड़कों पर उतरने का है। उन्होंने आपदा प्रभावितों की मदद में लापरवाही का आरोप भी लगाया। कहा कि ध्वस्त सड़कें अभी तक खुल नहीं पाई हैं, लोगों को जरूरी सामान नहीं मिल रहा है। वोट चोरी से लेकर कानून व्यवस्था और आपदा में कुप्रबंधन के खिलाफ कांग्रेस मंगलवार को सचिवालय कूच करने जा रही है। कूच में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष करण माहरा, नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य, पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत, पूर्व अध्यक्ष प्रीतम सिंह, पूर्व अध्यक्ष गणेश गोदियाल समेत सभी बड़े नेता शामिल होंगे।

अल्मोड़ा पुलिस ने 4 लाख के गांजे के साथ तस्कर दबोचा

अल्मोड़ा। नशे के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति के तहत अल्मोड़ा पुलिस को बड़ी सफलता मिली है। मरचूला बैरियर के पास पुलिस टीम ने चेकिंग के दौरान एक कार से करीब 16 किलो अवैध गांजा बरामद कर तस्कर को गिरफ्तार किया। बरामद नशीले पदार्थ की कीमत लगभग 3.99 लाख रुपये आंकी गई है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक देवेन्द्र पींचा के निर्देश पर जिले में अवैध नशे के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत यह कार्रवाई की गई। अपर पुलिस अधीक्षक हरबन्स सिंह और सीओ रानीखेत विमल प्रसाद के पर्यवेक्षण में, उपनिरीक्षक कश्मीर सिंह के नेतृत्व में थानाध्यक्ष सल्ट की टीम ने शनिवार रात मरचूला बैरियर के पास सघन चेकिंग अभियान चलाया। इस दौरान धूमाकोट रोड से आ रही एक मैटेलिक सिल्वर रंग

की कार (संख्या– यूके 18 पी 3836) को संदिग्ध मानते हुए रोका गया। तलाशी में कार की डिग्गी से नीले–आसमानी रंग के प्लास्टिक कट्टे में रखा 15.985 किलो अवैध गांजा बरामद हुआ। गिरफ्तार तस्कर की पहचान पंकज रावत (32) पुत्र जगमोहन सिंह रावत, निवासी निजड़ा फार्म, सैनिक कॉलोनी, काशीपुर, जिला ऊधम सिंह नगर के रूप में हुई। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज कर आवश्यक कार्रवाई शुरू कर दी है। कार्रवाई में थानाध्यक्ष सल्ट उपनिरीक्षक कश्मीर सिंह, अपर उपनिरीक्षक लोमेश कुमार, हेड कांस्टेबल सुरेशचंद्र, हेड कांस्टेबल दीपक कुमार और कांस्टेबल अमरेन्द्र कुमार शामिल रहे।

धौलादेवी के शिक्षक देंगे धरना, पदोन्नति और स्थानांतरण की रखी मांग

अल्मोड़ा। प्रधानाचार्य पद पर सीधी भर्ती निरस्त करने, शिक्षकों के प्रत्येक स्तर पर पदोन्नति सुनिश्चित करने और लंबित स्थानांतरण प्रक्रियाओं को पूर्ण करने की मांग को लेकर सोमवार को धौलादेवी ब्लॉक के राजकीय शिक्षक खंड शिक्षा अधिकारी कार्यालय में धरना प्रदर्शन करेंगे। राजकीय शिक्षक संघ ब्लॉक धौलादेवी के ब्लॉक अध्यक्ष त्रिभुवन बिष्ट और ब्लॉक मंत्री नितेश कांडपाल ने बताया कि शिक्षक अपनी मांगों को लेकर 18 अगस्त से चॉक-डाउन आंदोलन कर रहे हैं, लेकिन सरकार की ओर से कोई सकारात्मक पहल नहीं की गई है। उन्होंने कहा कि इस उपेक्षा से शिक्षकों में भारी आक्रोश है। संघ पदाधिकारियों ने कहा कि शिक्षक देश के भविष्य का निर्माण करते हैं, लेकिन वर्षों से पदोन्नति न होने से उनका मनोबल प्रभावित हो रहा है। कई शिक्षक एक ही पद पर 20 से 30 वर्ष की सेवा देने के बाद सेवानिवृत्त हो रहे हैं। प्रशासनिक और शैक्षणिक संवर्ग अलग किए जाने से पदोन्नति के अवसर पहले ही सीमित हो गए हैं, और अब सरकार पदोन्नति के पदों पर सीधी भर्ती करने की योजना बना रही है, जिससे शिक्षकों की उम्मीदें पूरी तरह समाप्त हो जाएंगी। उन्होंने यह भी बताया कि कई शिक्षक दुर्गम क्षेत्रों में वर्षों से तैनात हैं और स्थानांतरण न होने के कारण उन्हें गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। संघ के प्रांतीय पदाधिकारी इन मांगों को लेकर कई बार शासन से वार्ता कर चुके हैं, लेकिन समाधान नहीं निकल पाया है।

जयन्त
संस्थापक
नरेन्द्र उनियाल
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और
सम्पादक
नागेन्द्र उनियाल
द्वारा जयन्त प्रकाशन डिग्री कॉलेज रोड़, जौनपुर कोटद्वार गढ़वाल (उत्तराखण्ड) से मुद्रित तथा जयन्त कार्यालय चन्द्रसिंह गढ़वाली मार्ग, गैरसैंण, जनपद चमोली उत्तराखण्ड से प्रकाशित
RNI No.UTTHIN/2005/16338